॥ ओ३म् ॥

संस्कृतवाक्यप्रबोधः

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वितीयं पुस्तकम्

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मितः

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर

ओ३म्

संस्कृतवाक्यप्रबोधः

श्रीमत्स्वामिदयानन्दसरस्वतीनिर्मितः

पठनपाठनव्यवस्थायां द्वितीयं पुस्तकम्

प्रकाशकः

वैदिक पुस्तकालय

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर

MUNSHIRAM MANOHARLAL
PUBLISHERS PVT. LTD.
Sanskrit Religious Music & Ayurvedic Book Sellers
4416, Nai Sarak, Delhi-110006
Phone 2391154

प्रकाशक–
वैदिक पुस्तकालय,
दयानन्द आश्रम,
केसरगंज, अजमेर–३०५००१

सृष्ट्यब्द : १,९६,०८,५३१०४

वि. संवत् २०६०
सन् २००३

षोडशावृत्तिः

मूल्य : १५.०० रुपये

मुद्रक : राधा प्रेस, कैलाश नगर, दिल्ली-११००३१

प्रकाशकीय वक्तव्य

परोपकारिणी सभा द्वारा **'संस्कृत वाक्य प्रबोध'** का यह सोलहवां संस्करण प्रकाशित किया जा रहा है। सभा के हस्तलिखित ग्रन्थों के संग्रह में **'संस्कृत वाक्य प्रबोध'** का मूल हस्तलेख सुरक्षित है इसमें जगह–जगह महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज के स्वयं के द्वारा किये गये संशोधन विद्यमान हैं। इस हस्तलेख में पृष्ठ सं. १९ से २४ तक तथा अन्तिम मन्तव्यामन्तव्य प्रकरण की मूल प्रति भी नहीं है। इस पुस्तक के प्रथम संस्करण के संशोधक पं. भीमसेन थे। स्वामी जी की देखरेख में यह पुस्तक नहीं छपी थी अतः इसमें कुछ अशुद्धियाँ रह गई थीं। कुछ अशुद्धियों के सम्बन्ध में पं. अम्बिका दत्त ने आक्षेप किये थे। कृपया परिशिष्ट–१ देखें। इनमें से कुछ ही अशुद्धियाँ वास्तव मेंअशुद्धियाँ थीं। अन्य अशुद्धियों के सम्बन्ध में पं. अम्बिकादत्तजी के आक्षेप निराधार एवं गलत थे। इस संस्करण को मूल हस्तलेख से मिलाकर छापा गया है। कुछ वाक्य ऐसे हैं जो मूल में नहीं है किन्तु प्रथम संस्करण में हैं। प्रथम संस्करण में ऐसे वाक्य जोड़ने से कहीं–कहीं अशुद्धि भी हो गई है। कुछ वाक्य मूल में सही थे उन्हें व्यर्थ बदला गया है। ऐसे सब स्थलों के लिये परिशिष्ट–२ देखना चाहिये।

इस संस्करण को सुन्दर और शुद्ध बनाने के लिये भरसक प्रयास किया गया है। इस संस्करण में संस्कृत वाक्यों को काले अक्षरों में तथा हिन्दी के वाक्यों को साधारण अक्षरों में रखा गया है। प्रत्येक वाक्य के प्रारम्भ में क्रम संख्या लिख दी गई है ताकि पठन–पाठन में सुविधा हो। परिशिष्ट–१ में महर्षि द्वारा बारहट श्री कृशनजी को चैत्र कृष्णा १० संवत् १९३९ को तथा श्री मुंशी बख्तावरसिंह को दिनांक १८.८.१८८० को लिखे गये पत्र के अंश भी बढ़ा दिया गये हैं। अशुद्धियाँ न रहें अतः प्रूफ को कई बार देखा गया है। फिर भी अल्पज्ञता के कारण कुछ अशुद्धियाँ रहना स्वाभाविक है। विद्वत् जन यदि उनके बारे में ध्यान दिलायेंगे तो उन्हें अगले संस्करण में ठीक कर दिया जावेगा। संस्करण की शुद्धता के लिये श्री मोहनचन्द आर्य ने पूर्ण प्रयास किया है सभा उनका धन्यवाद करती है।

मंत्री

परोपकारिणी सभा, केसरगंज,

अजमेर

भूमिका

मैंने इस ''**संस्कृतवाक्यप्रबोध**'' पुस्तक को बनाना अवश्य इसलिये समझा है कि शिक्षा को पढ़ के कुछ–कुछ संस्कृत भाषण का आना विद्यार्थियों को उत्साह का कारण है। जब वे व्याकरण के सन्धिविषयादि पुस्तकों को पढ़ लेंगे तब तो उनको स्वतः ही संस्कृत बोलने का बोध हो जायगा, परन्तु यह जो संस्कृत बोलने का अभ्यास प्रथम किया जाता है, वह भी आगे–आगे संस्कृत पढ़ने में बहुत सहाय करेगा। जो कोई व्याकरणादि ग्रन्थ पढ़े बिना भी संस्कृत बोलने में उत्साह करते हैं, वे भी इसको पढ़के व्यवहारसम्बन्धी संस्कृत भाषा को बोल और दूसरे का सुनके भी कुछ–कुछ समझ सकेंगे। जब बाल्यावस्था से संस्कृत बोलने का अभ्यास होगा तो उसको आगे–आगे संस्कृत बोलने का अभ्यास अधिक से अधिक ही होता जायगा। और जब बालक भी आपस में संस्कृत भाषण करेंगे तो उनको देख कर जवान–वृद्ध मनुष्य भी संस्कृत बोलने में रुचि अवश्य करेंगे। जहां कहीं संस्कृत के नहीं जानने वाले मनुष्यों के सामने दूसरे को अपना गुप्त अभिप्राय समझाना चाहें तो वहां संस्कृत भाषण काम आता है।

जब इसके पढ़ाने वाले विद्यार्थियों को ग्रन्थस्थ वाक्यों को पढ़ावें उस समय दूसरे वैसे ही नवीन वाक्य बना कर सुनाते जावें, जिससे पढ़ने वालों की बुद्धि बाहर के वाक्यों में भी फैल जाय। और पढ़ने वाले भी एक वाक्य को पढ़के उसके सदृश अन्य वाक्यों की रचना भी करें कि जिससे बहुत शीघ्र बोध हो

जाय, परन्तु वाक्य बोलने में स्पष्ट अक्षर, शुद्धोच्चारण, सार्थकता, देश और काल वस्तु के अनुकूल जो पद जहां बोलना उचित हो वहीं बोलना और दूसरे के वाक्यों पर ध्यान देकर सुनके समझना। प्रसन्नमुख, धैर्य, निरभिमान और गम्भीरतादि गुणों को धारण करके क्रोध, चपलता, अभिमान और तुच्छतादि दोषों से दूर रहकर अपने वा किसी के सत्य वाक्य का खण्डन और अपने अथवा किसी के असत्य का मण्डन कभी न करें और सर्वदा सत्य का ग्रहण करते रहें।

इस ग्रन्थ में संस्कृत वाक्य प्रथम और उसके सामने भाषार्थ इसलिये लिखा है कि पढ़ने वालों को सुगमता हो और संस्कृत की भाषा और भाषा का संस्कृत भी यथायोग्य बना सकें।

काशी, फा० शु० ११ **दयानन्द सरस्वती**

[१९३६ वि०]

अथ विषयसूचीपत्रम्

क्रम संं०	नाम प्रकरण	पृष्ठ संं०
१	गुरुशिष्यवार्त्तालाप प्रकरणम्	१
२	नामनिवासस्थान प्र०	२
३	गृहाश्रम प्र०	४
४	भोजन प्र०	५
५	देशदेशान्तर प्र०	६
६	सभा प्र०	८
७	आर्यावर्त्त चक्रवर्त्तिराज प्र०	९
८	राजप्रजालक्षणराज–नीत्यनीति प्र०	९
९	शत्रुवश प्र०	१०
१०	वैश्यव्यवहार प्र०	११
११	कुसीदग्रहण प्र०	११
१२	नौकाविमानादिचालन प्र०	११
१३	क्रयविक्रय प्र०	१२
१४	गमनागमन प्र० [१]	१३
१५	क्षेत्रवपन प्र०	१३
१६	शस्यच्छेदन प्र०	१३
१७	गवादिदोहन परिमाण प्र०	१४
१८	क्रयविक्रयार्घ प्र०	१४
१९	कुसीद प्र०	१५
२०	उत्तमर्णाधमर्ण प्र०	१५
२१	राजप्रजासम्बन्ध प्र०	१५
२२	साक्षि प्र०	१५
२३	सेव्यसेवक प्र०	१७
२४	मिश्रित प्र० [१]	१८
२५	गमनागमन प्र० [२]	१८
२६	रोग प्र०	१९
२७	मिश्रित प्र० [२]	२०
२८	विवाहस्त्रीपुरुषालाप प्र०	२१
२९	स्त्रीश्वश्रूश्वशुरादि–सेव्यसेवक प्र०	२१
३०	ननन्दभ्रातृजायासंवाद प्र०	२२
३१	सायंकालकृत्य प्र०	२३
३२	शरीराऽवयव प्र०	२४
३३	राजसभा प्र०	२७
३४	ग्राम्यपशु प्र०	२९
३५	ग्रामस्थपक्षि प्र०	३०
३६	वन्यपशु प्र०	३१
३७	वनस्थपक्षि	३२
३८	तिर्यग्जन्तु प्र०	३३
३९	जलजन्तु प्र०	३३
४०	वृक्षवनस्पति प्र०	३४
४१	औषध प्र०	३४
४२	आत्मीय प्र०	३५
४३	सामन्त प्र०	३७
४४	कारु प्र०	३७
४५	अयस्कार प्र०	३७
४६	सुवर्णकार प्र०	३७
४७	कुलाल प्र०	३८
४८	तन्तुवाय प्र०	३८
४९	सूचीकार प्र०	३८
५०	मिश्रित प्र० [३]	३८
५१	लेख्यलेखक प्र०	४३
५२	मन्तव्यामन्तव्य प्र०	४४
५३	परिशिष्ट [१]	४५
५४	परिशिष्ट [२] टिप्पणियां	४९

युगपुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन परिचय

स्वामी दयानन्द सरस्वती का जन्म विक्रम संवत् १८८१ तदनुसार सन् १८२४ में एक औदीच्य ब्राह्मण वंश में टंकारा ग्राम मोर्वी राज्य गुजरात प्रान्त में हुआ। आपका बाल्यकाल का नाम मूलशंकर था। आपके पिताजी का नाम करसन जी तिवारी था। करसन जी ग्राम के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। करसन जी अपनी कुल परम्परा के अनुसार कट्टर शिव भक्त थे। उन्होंने बालक मूलशंकर का आठवें वर्ष की आयु में यज्ञोपवीत संस्कार कर शिव की १० वें वर्ष में उपासना के लिए प्रेरित किया। कुलक्रमानुसार बालक मूलशंकर की शिक्षा का प्रारम्भ पांच वर्ष की आयु में किया गया और चौदह वर्ष की आयु पर्यन्त उन्होंने संस्कृत व्याकरण , अमरकोष, यजुर्वेद सम्पूर्ण, निघण्टु, पूर्वमीमांसा, शिवभक्ति के योग्य स्तोत्र का स्मरण कर लिया था। इस प्रकार उन्होंने पिताजी से परम्परागत शिक्षा को पूर्ण किया।

बालक मूलशंकर के जीवन का उद्देश्य तो कुछ और ही था जिसको जीवन में घटनेवाली घटनाओं ने स्पष्ट किया। उनके जीवन की पहली घटना तेरह वर्ष की आयु में घटी जब पिता ने शिवरात्रि के अवसर पर व्रतपूर्वक शिव की उपासना के लिए प्रेरित किया। बालक मूलशंकर ने इस अवसर पर उपवास रखा रात्रि को अपने पिता एवं परिवार के सदस्यों के साथ पूजा में सम्मिलित होने के लिए गांव के समीप बने हुए शिव मंन्दिर में गये। मन्दिर के पुजारी, पिता तथा दूसरे भक्तगण रात्रि के प्रथम प्रहर की पूजा समाप्त कर नींद प्रभाव में सो गये परन्तु बालक मूलशंकर जागता रहा क्योंकि उसके मन में शिव के दर्शन करने की इच्छा थी। नींद आने पर आंखों में पानी के छींटे देकर वह जागता रहा। इस मध्य उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ एक चूहा बिल से निकला और शिव की मूर्ति पर कूद-फांद करने लगा, मूर्ति पर जो कुछ प्रसाद चढ़ाया गया था उसे खाने लगा। इस सब को देखकर बालक के मन में प्रश्न उठा क्या यह वास्तविक शिव है, क्या यह अपनी रक्षा में समर्थ नहीं। मन में अनेक तरह के प्रश्न उठने लगे तब मूलशंकर ने अपने सोते हुए पिता को जगाकर उनसे अपने प्रश्नों का समाधान चाहा। क्या यह शिव सच्चा है? यह चूहे से भी अपनी रक्षा नहीं कर पाता तो त्रिलोक की रक्षा कैसे कर

सकेगा। पिता ने बालक को समझाने का प्रयास किया कि सच्चे शिव तो कैलास पर रहते हैं यह तो उनकी मूर्ति है। इस उत्तर ने बालक के मन में खलबली उत्पन्न कर दी। उस स्थिति में पिता ने बालक को घर भेज दिया। मूलशंकर ने घर आकर अपना व्रतोपवास तोड़कर भोजन किया और सो गया परन्तु उसके मन में प्रश्न उठता रहा यह सच्चा शिव नहीं है तो सच्चे शिव की खोज करनी होगी उसका साक्षात्कार करना होगा यह उसके जीवन यात्रा का पहला पड़ाव था।

बालक मूलशंकर के जीवन में दूसरा पड़ाव तब आया जब उनकी अवस्था १६ वर्ष की थी उनकी छोटी बहन जिसे वे बहुत अधिक प्यार करते थे हैजे से मर गई। इस घटना ने मूलशंकर को स्तम्भित कर दिया, जब सारा परिवार दु:ख में रो रहा था मूलशंकर मूर्तिवत् हो गये और उनकी आँखों से एक भी आसूं नहीं निकला, लोगों ने कहा यह तो वज्र हृदय है। इसके पश्चात् जब महर्षि १९ वर्ष के थे। उनके प्रिय चाचा का भी देहान्त हो गया। उनकी मृत्यु ने उन्हें गहरे तक हिला दिया, उनके मन में प्रश्न उठने लगे मृत्यु क्या है, क्या मुझे भी मरना होगा? क्या मृत्यु से नहीं बचा जा सकता। इन प्रश्नों ने मूलशंकर को विचलित कर दिया। और उनके हृदय में वैराग्य भावना उत्पन्न हो गई।

इस बीच माता-पिता ने सोचा कहीं मूलशंकर विरक्त न हो जाये और उसकी आयु को देखकर कुल परम्पराओं का निर्वाह करने के लिए उसे तैयार किया और उसका विवाह करना चाहा, परन्तु मूलशंकर ने आगे अध्ययन की इच्छा व्यक्त की माता-पिता ने पास के गांव के पण्डित से पढ़ने की व्यवस्था कर दी। परन्तु मूलशंकर के मन में सच्चे शिव की खोज और मृत्यु पर विजय पाने की लालसा जन्म ले चुकी थी। वह सबसे इन्हीं प्रश्नों का समाधान पूछता था। जब माता-पिता को अपने बालक की इस वैराग्य की प्रवृत्ति का पता लगा तो उन्होंने बलात् मूलशंकर के विवाह का निश्चय किया। तैयारी होने लगी, मूलशंकर को बन्धन के भय ने भागने के लिये विवश कर दिया, और वे लक्ष्य प्राप्ति की यात्रा के लिए एक रात्रि को घर से निकल पड़े। यह समय संवत् १९०३ अर्थात् सन् १८४६ का था। घर से निकल मूलशंकर ने अपने लक्ष्य के लिए देशाटन करना प्रारम्भ किया, तीर्थ स्थानों पर जाकर साधु, संन्यासी, ब्रह्मचारी जो भी मिला उसके सामने अपनी जिज्ञासा रखी और

उसका समाधान जानना चाहा परन्तु उन्हें सन्तोष न हुआ। इस यात्रा में सायले में उन्हें एक ब्रह्मचारी मिला जिसने मूलशंकर को ब्रह्मचर्य की दीक्षा देकर उनका नाम शुद्धचैतन्य ब्रह्मचारी रख दिया तथा काषाय वस्त्र भी धारण करा दिये। ब्रह्मचारी के वेश में उन्होंने सिद्धपुर के मेले में जाने का निश्चय किया, इस मेले में बहुत सारे साधु सन्त एकत्रित होते हैं। यहां योगी और तत्ववेत्ता लोगों से भेंट होने की आशा थी। सिद्धपुर के मेले में जाते हुए उनके परिवार से परिचित एक वैरागी से उनकी भेंट हो गई जिसने मूलशंकर के साधु बनने और सिद्धपुर के मेले में पहुँचने की सूचना पत्र द्वारा इनके पिता को दे दी। इनके पिता सिपाहियों को साथ लेकर मेले में पहुँच गये और अपने पुत्र को खोजकर पकड़ लिया उनके कपड़े फाड़ दिये, कमण्डल तोड़ दिया और उन पर सिपाहियों का पहरा लगा दिया। परिस्थिति की गम्भीरता और अपने लक्ष्य में आती बाधा को देखकर अपने मार्ग से न हटने का निर्णय कर सोते हुए सिपाहियों को चकमा देकर भाग निकले और दिनभर मन्दिर की छत पर पेड़ों में छिपे रहे और रात्रि होने पर मार्ग छोड़कर खेतों के रास्ते दूर निकल गये और पुनः लक्ष्य को खोजने में लग गये। शुद्ध चैतन्य के रूप में उन्होंने साधु संन्यासी ब्रह्मचारी योगियों की खोज में जंगल, नदियां, पर्वतों की यात्रा की जहां नर्मदा के उद्गम तक पहुँचे तो दूसरी ओर हिमालय की यात्रा कर अलखनन्दा के प्रारम्भ तक चले गये। इन यात्राओं में जंगली जानवरों से सामना किया तो प्रलोभन देने वालों और घातकर जान से मारने का प्रयत्न करने वालों से भी संघर्ष करना पड़ा। इसी यात्रा में उनकी भेंट एक वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी पूर्णानन्द जी महाराज से हुई उनसे संन्यास देने की प्रार्थना की तो उन्होंने उसे स्वीकार कर दीक्षा देकर उन्हें शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी से स्वामी दयानन्द सरस्वती बना दिया। और अपनी अवस्था के कारण शिक्षण की असमर्थता बताते हुए अपने शिष्य दण्डी विरजानन्द जी से अध्ययन की प्रेरणा दी जो मथुरा में निवास करते हुए छात्रों को शिक्षा देते थे।

स्वामी दयानन्द सरस्वती भ्रमण करते हुए १८५९ में स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया पर मथुरा पहुंचे और दरवाजे पर दस्तक दी। अन्दर से आवाज आई कौन हो, उत्तर मिला यही तो मैं जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ। गुरु ने समझा कि भगवान् ने उनकी सुनी और उसे योग्य शिष्य मिल गया है। शिष्य ने भी अनुभव किया कि उसकी टंकारा से प्रारम्भ हुई यात्रा अपने लक्ष्य पर

पहुँचने वाली है। यही वह स्थान है जहां सच्चे शिव का मार्ग पता लगेगा ओर यहीं पर मृत्यु से छुटकारा मिलेगा। स्वामी विरजानन्द सरस्वती एक अन्धे साधु थे परन्तु उन्हें दिव्यदृष्टि प्राप्त थी एक ओर ज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने निर्णायक बिन्दु-आर्ष और अनार्ष के भेद को समझने का खोजा था वहीं वे इस देश की स्वतन्त्रता के लिए अहर्निश यत्नशील थे। उन्होंने अनेक राजाओं और क्रान्तिकारियों को देश की स्वतन्त्रता के लिए प्रेरित किया था।

स्वामी दयानन्द सरस्वती को उन्होंने तभी पढ़ाना स्वीकार किया जब सब अनार्ष पुस्तकों को वे यमुना में प्रवाहित कर दें और शिष्य दयानन्द ने उन समस्त अनार्ष ग्रन्थों को गुरु की आज्ञा से यमुना में प्रवाहित कर दिया। मथुरा में रहकर पढ़ने की दूसरी समस्या स्वामी दयानन्द जी के सामने आवास और भोजन की थी जो अमरलाल जोशी जैसे समाज सेवकों के सहयोग से हल हुई।

गुरु विरजानन्द जी ने स्वामी दयानन्द को पाणिनि अष्टाध्यायी, पतञ्जलि मुनिकृत महाभाष्य, आचार्य यास्ककृत निघण्टु और निरुक्त को पढ़ाया। जिससे उन्हें वेद और वैदिक साहित्य को समझने और उसकी गुत्थियों को सुलझाने की दृष्टि प्राप्त हुई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने जब गुरु विरजानन्द जी महाराज के यहां अपनी शिक्षा पूर्ण की तो उन्होंने परम्परा के अनुसार गुरु जी को उनकी प्रिय वस्तु लौंग भेंट करनी चाही परन्तु गुरु जी ने उनकी भेंट अस्वीकार करते हुए कहा-दयानन्द गुरुदक्षिणा में मुझे लौंग नहीं चाहिए मैं तो तुम्हारे जीवन की गुरुदक्षिणा चाहता हूँ। मेरी इच्छा है इस समाज और देश में फैले अज्ञानान्धकार को दूर कर जग में ज्ञान के प्रकाश को फैलाओ जिससे मानव मात्र दुःख और दरिद्रता के मार्ग को छोड़कर सुख और समृद्धि के मार्ग पर चलकर सच्चे ईश्वर को पा सके। स्वामी दयानन्द जी ने तथास्तु कहकर गुरु जी की आज्ञा को शिरोधार्य किया। औा समाजसेवा के लिए निकल पड़े।

स्वामी जी का जीवन वेद के प्रति समर्पित था। उनका वैदिक ज्ञान स्पष्ट, निस्सन्देह था परिणामस्वरूप वे अपनी मान्यताओं से किसी प्रकार का समझौता करने के लिए तैयार न थे। इसी कारण उनके विचार प्रखर, उनकी भाषा दृढ़तापूर्ण तथा लेखन में युक्तियुक्तता दृष्टिगत होती है। वेद एवं वैदिक साहित्य को गहन एवं विस्तृत अध्ययन के आधार पर उन्होंने वेद ज्ञान को

पूर्ण पवित्र और अन्तिम सत्य के रूप में स्वीकार किया। उनकी दृष्टि में वेद में किसी प्रकार के लौकिक इतिहास का नितान्त अभाव है। इस प्रकार वेद का सन्देश सार्वकालिक और सार्वजनीन है। इसी सिद्धान्त को स्वीकार कर उन्होंने संसार में वेदों का सन्देश फैलाने का कार्य यावज्जीवन किया। उन्होंने वेदों के ज्ञान और ईश्वर की कृपा को सबके लिए समान रूप प्राप्य और स्वीकार्य बतलाया। इस आधार पर उनकी दृष्टि में स्त्री-पुरुष दोनों को विद्याध्ययन का समान अधिकार है। जैसे ईश्वर की बनाई हवा, पानी, प्रकाश पर सबका अधिकार है। वे मनुष्यों में किसी प्रकार की छूतछात, जन्म के आधार पर ऊंचनीच स्वीकार करने के विरोधी थे। धार्मिक व्यवहारों को उन्होंने लक्ष्यपरक सरल एवं व्यवहार्य रूप में व्याख्यायित किया। उन्होंने समाज में प्रचलित रुढ़ियों तथा अन्ध परम्पराओं का दृढ़तापूर्वक खण्डन किया। समाज में फैले अज्ञान, अन्याय और अभाव को समाप्त करने के लिए समाज के लोगों का आह्वान किया। उन्होंने जन्मना जाति व्यवस्था को मनुष्य समाज के प्रति अपराध घोषित किया तथा गाय आदि उपयोगी प्राणियों की हिंसा को पाप बताया। और सब प्रकार से वेद के आधार पर एक आदर्श समाज की संरचना का स्वरूप प्रस्तुत किया। अपने विचारों को उन्होंने आर्य समाज के दस नियम, अपनी पुस्तक स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश, सत्यार्थ प्रकाश तथा वेदभाष्य आदि ग्रन्थों में प्रतिपादित किया है। अपने वेदोक्त विचारों का देश-देशान्तर, और द्वीप-द्वीपान्तर में प्रचार-प्रसार करने के लिए उन्होंने प्रसिद्ध संस्था आर्य समाज की स्थापना की और व्यक्तिगत साधनों को समाज व देश की सेवा में लगाने के लिए परोपकारिणी सभा बनाई।

स्वामी दयानन्द सरस्वती संसार के महानतम लोगों में से थे जिन्होंने न केवल अपने समाज, देश, जाति के हित की बात सोची अपितु उन्होंने कल्याण की कामना और कल्पना की॥ पाश्चात्य लेखक रोम्यां रोला ने कहा था-

"Swami Dayanand was one of the greatest men ever born on the earth. Romain Rolland says of him and of the Arya Samaj Indian a religious thought raised a purely religious samaj. and its head was personality of the highest order, Dayanand

Saraswati: this man with the nature of a lion is one of these whome Europe is too apt to forget when she judge India. He was that rare combination, a thinker and a man of action with a genius for leadership."

अर्थात् भारतीय धार्मिक विचारों ने एक समाज को प्रस्तुत किया है। इस समाज के संस्थापक एक महान् और आदर्श व्यक्ति हैं जिनका नाम दयानन्द सरस्वती है। ये सिंह के समान पराक्रमी प्रकृति के हैं उनको पहचानने में योरोप ने भूल की है। इनके व्यक्तित्व में आदर्श चिन्तन और कर्मठता का अद्भुत संयोग हैं। आपमें बुद्धिमता एवं नेतृत्व की क्षमता का संगम है।

योगीराज अरविन्द ने आपके जीवन के विषय में लिखा है-

Shri Arvindo wrote of him:" Here was a very Soldior of light a warrior in God's] world a sculptor of men and institutions, a bold and rugged victor of the difficulties which matter presents a sprit and the whole sums itself up to me in a powerful impression of spritual practicality. He was a man with God in his soul, vision in his eyes, and power in his vision, Dayanand Saraswati was one of those personages whom history will pronounce as supermen. He was one of those whom the Vedas and the Brahmans call Devas to whom is due puja, i.e. The respect of mankind."

अर्थात्- वे प्रकाश पुञ्ज, परमात्मा की सृष्टि में महान् योद्धा, मनुष्य और संस्थाओं को सुधारने वाले शिल्पी और उन कठिनाइयों के वीर विजेता थे, जिन्हें प्रकृति, जीवात्मा के सम्मुख उपस्थित किया करती है। यह सारी बातें हृदय पटल पर उनकी कार्य रूप आत्मिक शक्ति का बड़ा प्रभाव पैदा करती हैं। वे एक ऐसे मानव थे जिनकी आत्मा में परमात्मा का प्रकाश था, उनके नेत्रों में उनकी कल्पना का तेज था और उनके हाथों में वह शक्ति थी कि जिसके द्वारा वे अपने जीवन से अपने विचारों को कार्यरूप में परिणित

कर सकें। दयानन्द सरस्वती उन महान् हस्तियों में से एक थे जिन्हे इतिहास में परम-श्रेष्ठ व्यक्ति के नाम से जाना जाता है। वे, वो व्यक्ति थे जिनको वेद और ब्राह्मण ग्रन्थ देवता कहते हैं, जो पूजा के योग्य है अर्थात् जिनमें उन उच्च मानवीय गुणों का समावेश है जो कि वन्दना के योग्य हैं।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपना जीवन समाज और देश की जनता का उत्थान करने और शिक्षित करने में लगाया। उन्होंने समाज से स्वार्थ, पाखण्ड दूर करने का प्रयास किया। उस समय अज्ञानी लोगों ने उन्हें गाली दी, उन पर पत्थर फैंके, और अनेक बार विष दिया परन्तु उन्होंने अपने मार्ग से हटना स्वीकार नहीं किया। एक बार स्वामी जी को एक व्यक्ति ने पान में विष खिला दिया। उनके भक्त ने उसे पकड़कर स्वामी जी के सामने उसे उपस्थित किया और कहा इसने आपको विष देने का अपराध किया है इसे गिरफ्तार कर लिया गया है। स्वामी जी ने उत्तर दिया मैं संसार को कैद से छुड़ाने आया हूँ किसी को कैद में डालना मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं अतः इसे मुक्त कर दो। स्वामी जी में समाज सेवा और परोपकार की तड़प थी, उन्हें जब एक साधु ने एकान्त में रहकर परमेश्वर का भजन करने की सलाह दी तो उन्होंने कहा मैं समाज की दासता, अज्ञानता, गरीबी और दीनता दूर कर उसे बन्धन से मुक्त करना चाहता हूँ। इसी में मेरी मुक्ति है मैं एकाकी मुक्त होने की इच्छा नहीं रखता।

स्वामी जी ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए सभी उपायों का उपयोग किया। उन्होंने जीवन भर देश में घूम-घूम कर भाषण दिये, वार्त्तालाप किये, शास्त्रार्थ किये समाज के सभी मत-सम्प्रदायों हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई सबका सिद्धान्तों की सत्यता पर विचार विमर्श कर निर्णय करने के लिए आह्वान किया। उन्होंने पत्रक छापे, विज्ञापन दिये, छोटी पुस्तिकायें लिखीं, बड़े ग्रन्थ लिखे, वेदों का भाष्य किया, उनकी प्रसिद्ध रचनाओं में प्रमुख ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश, वेदभाष्य की भूमिका रूप, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका तथा संस्कारों के माध्यम से जीवन निर्माण का ग्रन्थ संस्कार विधि मुख्य हैं। स्वामी जी के विचार लोकभाषा में वेद का सन्देश है। यह समाज के सभी वर्गों व सभी स्थानों के लोगों के लिए सदा उपयोगी है। आपके विचार इतने प्रगतिशील हैं कि वे कभी अस्वीकार्य हो ही नहीं सकते। स्वामी दयानन्द जी का जीवन संघर्ष का जीवन है। उनके जीवन की दृढ़ता और लक्ष्य के प्रति अविचल

निष्ठा एवं आदर्श अनुकरणीय हैं। उनकी अन्तिम यात्रा से पूर्व शाहपुराधीश उन्हें जोधपुर जाने से रोकते हुए उनके प्राणों के भय की बात कही तब स्वामी जी ने उत्तर दिया यदि लोग मेरी उंगलियों की बत्ती बनाकर भी जलायेंगे तो भी मैं अपने निश्चय को नहीं बदलूंगा। और हुआ भी ऐसा ही। जोधपुर में स्वामी जी षड़यन्त्र के शिकार हो गये। उनके सेवक ने ही उन्हें विष दे दिया परन्तु स्वामी जी ने अपने नाम के अनुरूप विषदाता को भी क्षमादान कर वहां से भगा दिया परन्तु विष प्रभाव न भाग सका स्वामी जी रोगी हो गये और चिकित्सा के लिए उन्हें आबूपर्वत पर ले जाया गया और वहां से अजमेर लाया गया जहां उनकी मृत्यु हो गई। जहां उनका जीवन आदर्श था वहां उनकी मृत्यु जीवन से भी आदर्श थी।

स्वामी जी महाराज ने १८८३ दीवाली के दिन अजमेर स्थित भिनाय कोठी में अन्तिम श्वास लिया। मृत्यु से पूर्व उन्होंने क्षौर कर्म कराया स्नान किया। इच्छानुसार भोजन बनवाकर थोड़ा सा भोजन किया। सभी आगन्तुकों से सायं ५-६ बजे के मध्य भेंट की सबसे कुशलक्षेम और इच्छा पूछी। सबको अपने पीछे खड़े होने के लिए कहा कमरे के सभी खिड़की और दरवाजे खोलने का आदेश दिया, तिथि, वार, पक्ष एवं मास की जानकारी ली। किसी भक्त ने उन्हें बताया आज कार्तिक कृष्ण पक्ष की अमावस्या और मंगलवार है। यह सुनकर महाराज ने छत की ओर दृष्टि दौड़ाई और वेदमन्त्रों का पाठ किया। प्रार्थना उपासना मन्त्रों का तथा संस्कृत श्लोकों का उच्चारण कर उच्च स्वर से गायत्री मन्त्र का पाठ किया हिन्दी में परमेश्वर से प्रार्थना कर आंख बन्द करके समाधिस्थ हो गये। कुछ समय पश्चात् आखें खोली और ये शब्द कहे- " परमेश्वर तूने अच्छी लीला की तेरी इच्छापूर्ण हो। " ये शब्द कहकर करवट से लेट गये गहरा श्वास भरा और छोड़ दिया, इसके साथ ही उनके प्राण पखेरू अनन्त में विलीन हो गये। यह सायं ६ बजे का समय था मृत्यु के समय स्वामी जी की मुख मुद्रा शान्त प्रसन्नता से परिपूर्ण थी। यह प्रयाण योगी का ही सम्भव है, किसी अन्य का नहीं।

आज स्वामी जी हमारे मध्य नहीं है वे अपने सत्य एवं शाश्वत विचारों से सदा हमारे बीच में जीवित हैं। हमें उनके लेखों को बुद्धिपूर्वक पढ़कर उनका वास्तविक रूप साक्षात् करने की आवश्यकता है। उनके बताये मार्ग पर चलकर हम अपना और संसार का भला कर सकते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ग्रन्थों की सूची

वैदिक साहित्य

१. वेद भाष्य का प्रथम नमूना (संवत् १९३१-अनुपलब्ध)

२. आर्याभिविनय (संवत् १९३२)

३. वेद भाष्य का दूसरा नमूना (संवत् १९३३)

४. चतुर्वेद विषय सूची (संवत् १९३३)

५. ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका (संवत् १९३३)

६. ऋग्वेदभाष्य (प्रथम मण्डल से सातवें मण्डल के ६१ वें सूक्त के दूसरे मन्त्र तक) (संवत् १९३४ से १९४०)

७. यजुर्वेद भाष्य-संपूर्ण (संवत् १९३४ से संवत् १९३९)

कर्मकाण्ड

१. सन्ध्या (संवत् १९२०)

२. पञ्च महायज्ञ विधि (प्रथम संस्करण संवत् १९३१ संशोधित संस्करण संवत् १९३४)

३. संस्कार विधि
(प्रथम संस्करण १९३२, द्वितीय संस्करण संवत् १९४०)

व्याकरण

१. अष्टाध्यायी भाष्य
(भाग १ से ३, अध्याय १ से ४ संवत् १९३५-१९३६)

२. संस्कृत वाक्य प्रबोध (संवत् १९३६)

३. वेदाङ्ग प्रकाश (१ से १४ भाग) (संवत् १९३६ से १९४० तक)

सैद्धान्तिक

१. भागवत खण्डन (संवत् १९२३)

२. अद्वैत मत खण्डन (संवत् १९२७)

३. वेदान्ति ध्वान्त निवारण (संवत् १९३१)

४. वेद विरुद्ध मत खण्डन (संवत् १९३१)

५. शिक्षापत्री ध्वान्त निवारण (स्वामी नारायण मत खण्डन) (संवत् १९३१)

६. सत्यार्थ प्रकाश
(प्रथम संस्करण १९३१, द्वितीय संस्करण संवत् १९३९)

७. भ्रान्ति निवारण (संवत् १९३४)

८. आर्योद्देश्य रत्नमाला (संवत् १९३४)

९. भ्रमोच्छेदन (संवत् १९३७)

१०. अनुभ्रमोच्छेदन (संवत् १९३७)

११. स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश (संवत् १९३९)

१२. महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (प्रकाशन काल संवत् २०५२)

विविध

१. गर्दभतापिनी उपनिषद् (संवत् १९३१)

२. पूना प्रवचन (व्याख्यानों का संग्रह) (संवत् १९३२)

३. कुरान का हिन्दी अनुवाद (संवत् १९३५)

४. व्यवहारभानु (संवत् १९३६)

५. आत्मकथा (संवत् १९३६)

६. गौकरुणानिधि (संवत् १९३७)

७. पत्र एवं विज्ञापन संकलन
(चार भागों में सन् १९८० से १९८३ तक प्रकाशित)

ओ३म्

परमगुरवे परमात्मने नमः

अथ संस्कृतवाक्यप्रबोधः

गुरुशिष्यवार्तालापप्रकरणम्

१भोः शिष्य! उत्तिष्ठ, प्रातःकालो जातः।	हे शिष्य! उठ सवेरा हुआ।
२ उत्तिष्ठामि।	उठता हूँ।
३ अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता न वा?	और भी सब विद्यार्थी उठे वा नहीं?
४ अधुना तु नोत्थिताः खलु।	अभी तो वे नहीं उठे हैं।
५ तानपि सर्वानुत्थापय।	उन सबको भी उठा दे।
६ सर्व उत्थापिताः।	सब उठा दिये।
७ सम्प्रत्यस्माभिः किं कर्त्तव्यम्?	इस समय हमको क्या करना चाहिए?
८ शौचादिकं कृत्वा सन्ध्यामुपासीध्वम्।	शरीरशुद्धि करके सन्ध्योपासन करो।
९ आवश्यकं कृत्वा सन्ध्योपासिताऽतः परमस्माभिः किं करणीयम्?	आवश्यक कर्म करके सन्ध्योपासन कर लिया, इसके आगे क्या करें?
१० अग्निहोत्रं विधाय पठत।	अग्निहोत्र करके पढ़ो।
११ पूर्वं किं पठनीयम्?	पहिले क्या पढ़ना चाहिये?
१२ वर्णोच्चारणशिक्षामधीध्वम्।	वर्णोच्चारणरीति को सीखो।
१३ अग्रे किमध्येतव्यम्?	आगे क्या पढ़ना चाहिये?
१४ किंचित्संस्कृतोक्तिबोधः क्रियताम्।	कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान करो।
१५ पुनः किमभ्यसनीयम्?	फिर किसका अभ्यास करें?
१६ यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय प्रयतध्वम्।	यथोचित व्यवहार करने के लिये प्रयत्न करो।
१७ कुतोऽनुचितव्यवहारकर्तुर्विद्यैव न जायते।	क्योंकि उल्टे व्यवहार करनेहारे को विद्या ही नहीं होती।
१८ को विद्वान् भवितुमर्हति?	कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य

होता है?

१९ यः सदाचारी प्राज्ञः पुरुषार्थी भवेत्
जो सत्याचरणशील, बुद्धिमान्, पुरुषार्थी हो।

२० कीदृशादाचार्यादधीत्य पण्डितो जायते?
कैसे आचार्य से पढ़ के पण्डित होता है।

२१ अनूचानतः।
पूर्ण विद्यावाले से।

२२ अथ किमध्यापयिष्यते भवता?
अब आप इसके अनन्तर हमको क्या पढ़ावेंगे?

२३ अष्टाध्यायीमहाभाष्यम्।
अष्टाध्यायी और महाभाष्य को।

२४ किमनेन पठितेन भविष्यति?
इसके पढ़ने से क्या होगा?

२५ शब्दार्थसम्बन्धविज्ञानम्।
शब्द, अर्थ और [उनके] सम्बन्धों का यथार्थ बोध।

२६ पुनः क्रमेण किं किमध्येतव्यम्?
फिर क्रम से क्या क्या पढ़ना चाहिये?

२७ शिक्षाकल्पनिघण्टुनिरुक्तछन्दो–ज्योतिषाणि वेदानामङ्गानि
शिक्षा, कल्प, निघण्टु–निरुक्त, छन्द और ज्योतिष वेदों के अङ्ग।

२८ मीमांसावैशेषिकन्याययोगसांख्य–वेदान्तान्युपाङ्गान्यायुर्धनुर्गान्धर्वार्था उपवेदानैतरेयशतपथसामगोपथ–ब्राह्मणान्यधीत्य ऋग्यजुस्सामाऽथर्ववेदान् पठन्तु।
मीमांसा वैशेषिक, न्याय, योग, सांख्य और वेदान्त, उपाङ्ग, आयुर्वेद, धनुर्वेद गान्धर्ववेद और अर्थवेद उपवेद, ऐतरेय शतपथ, साम और गोपथ ब्राह्मण ग्रन्थों को पढ़ के ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को पढ़ो।

२९ एतत्सर्वं विदित्वा किं कार्य्यम्?
ये सब जान के फिर क्या करना चाहिये?

३० धर्मजिज्ञासाऽनुष्ठानेएतेषामेवाऽध्यापनं च।
धर्म के जानने की इच्छा, उसी का आचरण और इन्हीं को सर्वदा पढ़ाया करो।

नामनिवासस्थानप्रकरणम्

१ तव किं नामास्ति?
तेरा क्या नाम है?

२ देवदत्तः।
देवदत्त।

३ क्वाऽभिजनो युवयोर्वर्त्तते?	तुम दोनों की जन्मभूमि कहां है?
४ कुरुक्षेत्रे।	कुरुक्षेत्र देश में।
५ युष्माकं जन्मदेशः को विद्यते?	तुम्हारा जन्मदेश कौनसा है?
६ पञ्चालाः।	पञ्चाल।
७ भवन्तः कुत्रत्याः?	आप कहां के हो?
८ वयं दाक्षिणात्याः स्मः।	हम दक्षिणी हैं।
९ तत्र का पूर्वः	वहां आपके निवास का कौन नगर है?
१० मुम्बापुरी।	मुम्बई।
११ इमे क्व निवसन्ति?	ये लोग कहां रहते हैं?
१२ नेपाले।	नेपाल में।
१३ अयं किमधीते?	यह क्या पढ़ता है?
१४ व्याकरणम्।	व्याकरण को।
१५ त्वया किमधीतम्?	तूने क्या पढ़ा है?
१६ न्यायशास्त्रम्।	न्यायशास्त्र।
१७ भवता किं पठितमस्ति?	आपने क्या पढ़ा है?
१८ पूर्वमीमांसा शास्त्रम्।	पूर्व मीमांसा शास्त्र।
१९ अयं भवदीयश्छात्रः किं प्रचर्च्चयति?	यह आपका विद्यार्थी क्या पढ़ता है?
२० ऋग्वेदम्।	ऋग्वेद को।
२१ त्वं कुत्र गच्छसि?	तू कहां जाता है।
२२ पाठाय व्रजामि।	पढ़ने के लिये जाता हूँ।
२३ कस्मादधीषे?	किससे पढ़ता है?
२४ यज्ञदत्तादध्यापकात्।	यज्ञदत्त अध्यापक से।
२५ इमे कुतोऽभ्यस्यन्ति?	ये किससे पढ़ते हैं?
२६ विष्णुमित्रात्।	विष्णुमित्र से।
२७ तं वाध्ययनेऽ कियन्तः संवत्सरा व्यतीताः?	और उसको पढ़ते हुए कितने वर्ष बीते?
२८ पञ्च।	पांच।
२९ भवान् कतिवार्षिकः?	आप कितने वर्ष के हुए?

३० त्रयोदशवार्षिकः।	तेरह वर्ष का।
३१ त्वया पठनारम्भः कदा कृतः?	तूने पढ़ने का आरम्भ कब किया था?
३२ यदाहमष्टवार्षिकोऽभूवम्।	जब मैं आठ वर्ष का हुआ था।
३३ तव मातापितरौ जीवतो न वा?	तेरे माता पिता जीते हैं वा नहीं?
३४ *विद्येते।	जीते हैं।
३५ तव कति भ्रातरो भगिन्यश्च?	तेरे कितने भाई और बहिन हैं?
३६ त्रयो भ्रातरश्चैका च भगिन्यस्ति।	तीन भाई और एक बहिन!
३७ त्वं ज्येष्ठस्ते, सा वा?	तू ज्येष्ठ वा तेरे भाई अथवा बहिन?
३८ अहमेवाग्रजोऽस्मि।	मैं ही सबसे पहिले जन्मा हूँ।
३९ तव पितरौ विद्वांसौ न वा?	तेरे माता–पिता विद्या पढ़े हैं वा नहीं?
४० महाविद्वांसौ स्तः।	बड़े विद्वान् हैं।
४१ तर्हि त्वया पित्रोः सकाशात्कुतो न विद्या गृहीता?	तो तूने माता–पिता से विद्या ग्रहण क्यों न की?
४२ अष्टमवर्षपर्य्यन्तं कृता।	आठ वर्ष पर्यन्त की थी।
४३ अत ऊर्ध्वं कुतो न कृता?	इससे आगे क्यों न की?
४४ मातृमान् पितृमानाचार्य्यवान् पुरुषो वेदेति शास्त्रविधेः।	माता–पिता से आठवें वर्ष पर्य्यन्त, इसके आगे आचार्य से पढ़ने का शास्त्र में विधान है, इससे।
४५ अन्यच्च गृहे कार्यबाहुल्येन	और भी घर में बहुत काम होने से
४६ निरन्तरमध्ययनमेव न जायतेऽतः।	निरन्तर पढ़ना ही नहीं होता इसलिये भी।
४७ अतः परं कियद्वर्षपर्यन्तमध्येष्यसे?	इसके आगे कितने वर्ष पर्यन्त पढ़ेगा?
४८ पञ्चत्रिंशद्वर्षाणि।	पैंतीस वर्ष तक।

गृहाश्रमप्रकरणम्

१ पुनस्ते का चिकीर्षास्ति?	फिर तुझको क्या करने की इच्छा है?
२ गृहाश्रमस्य।	गृहस्थाश्रम की।
३ किं च भोः पूर्णविद्यस्य जितेन्द्रियस्य परोपकारकरणाय संन्यासाश्रमग्रहणं शास्त्रोक्तमस्ति	क्यों जी! जिसकी पूर्ण विद्या और जो जितेन्द्रिय है उसको परोपकार करने के लिये संन्यासाश्रम का ग्रहण

तत् किं न करिष्यसि?	करना शास्त्रोक्त है, क्या इसको न करोगे?
४ किं गृहाश्रमे परोपकारो न भवति?	क्या गृहाश्रम में परोपकार नहीं होता?
५ यादृशः संन्यासाश्रमिणा कर्तुं शक्यते न तादृशो गृहाश्रमिणाऽनेककार्यैः प्रतिबन्धकत्वेनाऽस्य सर्वत्र भ्रमणाशक्यत्वात्।	जैसा संन्यासाश्रमी से मनुष्यों का उपकार हो सकता है वैसा गृहाश्रमी से नहीं हो सकता, क्योंकि अनेक कामों की रुकावट से इसका सर्वत्र भ्रमण ही नहीं हो सकता।

भोजनप्रकरणम्

१ नित्यः स्वाध्यायो जातो भोजन-समय आगतो गन्तव्यम्।	नित्य का पढ़ना-पढ़ाना हो गया, भोजनसमय आया, चलना चाहिये।
२ तव पाकशालायां प्रत्यहं भोजनाय किं किं पच्यते?	तुम्हारी पाकशाला में प्रतिदिन भोजन के लिये क्या क्या पकाया जाता है?
३ शाकसूपौदश्वित्कौदनरोटिकादयः।	शाक, दाल, कढ़ी, भात रोटी और चटनी आदि
४ किं वः पायसादिमधुरेषु रुचि-र्नास्ति?	क्या आप लोगों की खीर आदि मीठे भोजन में रुचि नहीं है?
५ अस्ति खलु परन्त्वेतानि कदाचिद् कदाचिद् भवन्ति।	है परन्तु ये चीजें कभी कभी बनती है।
६ कदाचिच्छष्कुली श्रीखण्डादयोऽपि भवन्ति न वा?	कभी पूरी, कचोरी, श्रीखण्डादि भी होते हैं वा नहीं?
७ भवन्ति परन्तु यथर्त्तुयोगम्।	होते हैं परन्तु जैसा ऋतु होता है वैसे ही भोजन बनते हैं।
८ सत्यमस्माकमपि भोजनादिकमेव-मेव निष्पद्यते।	ठीक है, हमारे भी भोजन ऐसे ही बनते हैं।
९ त्वं भोजनं करिष्यसि न वा?	तू भोजन करेगा वा नहीं?
१० अद्य न करोम्यजीर्णतास्ति।	आज नहीं करता अजीर्णता है।
११ अधिक भोजनस्येदमेव फलम्।	अधिक भोजन का यही फल है।
१२ बुद्धिमता तु यावज्जीर्यते तावदैव	बुद्धिमान् पुरुष तो जितना पचे उतना

भुज्यते।	ही खाता है।
१३ अतिस्वल्पे भुक्ते शरीरबलं ह्रसत्यधिके चातः सर्वदा मिताहारी भवेत्।	बहुत कम और अत्यधिक भोजने करने से शरीर का बल घट जाता है इससे सब दिन मिताहारी होवे।
१५ योऽन्यथाहारव्यवहारौ करोति स कथं न दुःखी जायेत?	जो उलट-पलट आहार और व्यवहार करता है वह क्यों न दुःखी होवे?
१६ येन शरीराच्छ्रमो न क्रियते स शरीर सुखं नाप्नोति।	जो शरीर से परिश्रम नहीं करता वह शरीर के सुख को प्राप्त नहीं होता।
१७ येनात्मना पुरुषार्थो न विधीयते तस्यात्मनो बलमपि न जायते।	जो आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करता उसको आत्मा का बल भी नहीं होता।
१८ तस्मात्सर्वैर्मनुष्यैर्यथाशक्ति सत्क्रिया नित्यं साधनीया।	इससे सब मनुष्यों को यथाशक्ति उत्तम कर्मों की साधना नित्य करनी चाहिये।
१९ भो देवदत्त? त्वामहं निमन्त्रये।	हे देवदत्त! मैं तुम्हारा निमन्त्रण करता हूँ।
२० मन्येऽहं कदा खल्वागच्छेयम्?	मैं मानता हूँ परन्तु किस समय आऊँ?
२१ श्वो द्वितीयप्रहरमध्ये आगन्तव्यम्।	कल दोपहर दिन चढ़े आना चाहिये।
२२ आगच्छ भो आसनमध्यास्व	आप आइये आसन पर बैठिये।
२३ त्वया महती कृपा कृता।	आपने बड़ी कृपा की।

देशदेशान्तरप्रकरणम्

१ भवानेतान् जानातीमे महाविद्वांसः सन्ति।	आप इनको जानते हैं? ये बड़े विद्वान् हैं।
२ किंनामान एते कुत्रत्याः खलु?	इनके क्या क्या नाम और ये कहां-कहां के रहने वाले हैं?
३ अयं यज्ञदत्तः काशीनिवासी।	यह यज्ञदत्त काशी में निवास करता है।
४ विष्णुमित्रोऽयं कुरुक्षेत्रवास्तव्यः।	यह विष्णुमित्र कुरुक्षेत्र में बसता है।
५ सोमदत्तोऽयं माथुरः।	यह सोमदत्त मथुरा में रहता है।
६ अयं सुशर्मा पर्वतीयः।	यह सुशर्म्मा पर्वत में रहता है।
७ अयमाश्वलायनो दाक्षिणात्योऽस्ति।	यह आश्वलायन दक्षिणी है।
८ अयं जयदेवः पाश्चात्यो वर्तते।	यह जयदेव पश्चिमदेशवासी है।

९ अयं कुमारभट्टो वाङ्गो विद्यते।	यह कुमारभट्ट बंगाली है।
१० अयं कापिलेयः पाताले निवसति।	यह कापिलेय पाताल अर्थात् अमेरिका में रहता है।
११ अयं चित्रभानुर्हरिवर्षस्थः।	यह चित्रभानु हिमालय उत्तर हरिवर्ष अर्थात् यूरोप में रहता है।
१२ इमौ सुकामसुभद्रौ चीननिकायौ।	ये सुकाम और सुभद्र चीन के वासी हैं।
१३ अयं सुमित्रो गन्धारस्थायी।	यह सुमित्र गन्धार अर्थात् काबुल कन्धार का रहनेवाला है।
१४ अयं सुभटो लङ्काजः।	यह सुभट लंका में जन्मा है।
१५ इमे पंच सुवीरातिबलसुकर्मसुधर्म-शतधन्वानो मत्स्याः।	सुवीर, अतिबल, सुकर्मा, सुधर्मा और शतधन्वा ये पांच मारवाड़ के रहनेवाले हैं।
१६ एते मयाऽऽमन्त्रिताः स्वस्वस्था-नादागताः।	ये सब मेरे बुलाने पर अपने अपने घर से आये हैं।
१७ इमे नव शिवकृष्णगोपालमाधव-सुचन्द्रप्रक्रमभूदेवचित्रसेन महारथा अत्रत्याः।	शिव, कृष्ण, गोपाल, माधव, सुचन्द्र, प्रक्रम, भूदेव, चित्रसेन और महारथ ये नव इस मध्य देश के रहनेवाले हैं।
१८ अहोभाग्यं मेऽस्ति त्वत्कृपयैतेषा-मपि समागतो जातः।	मेरा बड़ा भाग्य है कि आपकी कृपा से इन सत्पुरुषों का भी मिलाप हुआ।
१९ अहमपि सभवतः एतान्नि-मन्त्रयितुमिच्छामि।	मैं भी आपके समेत इनका निमन्त्रण करना चाहता हूँ।
२० अस्माभिर्भवन्निमन्त्रणमूरीकृतम्।	हमने आपका निमन्त्रण स्वीकार किया।
२१ सत्कृतोऽस्मि परन्तु भवद्भोजनार्थं किं किं पक्तव्यम्? यद्यद्भोक्तुमिच्छास्ति तत्तदनुज्ञापयन्तु।	आपके निमन्त्रण मानने से मैं बड़ा प्रसन्न हुआ परन्तु आपके भोजन के लिये क्या क्या पकाया जाय? जिस जिस पदार्थ के खाने की इच्छा हो उस उसकी आज्ञा कीजिये।
२२ भवान् देशकालज्ञः कथनेन किम्। यथायोग्यं पक्तव्यम्।	आप देशकाल को जानते हैं कहने से क्या। यथायोग्य ही पकाना चाहिये।

२३ सत्यमेवमेव करिष्यामि।	ठीक है, ऐसा ही करूंगा।
२४ उत्तिष्ठत भोजनसमय आगतः पाकः सिद्धोजातः।	उठिये, भोजन-समय हुआ भोजन तैयार हो गया है।
२५ भो भृत्य! पाद्यमर्घ्यमाचमनीयं जलं देहि।	हे नौकर! इनको पग, हाथ, मुख धोने के लिये जल दे।
२६ इदमानीतं जलं गृह्यताम्।	यह लाया जल लीजिये।
२७ भो पाचकाः! सर्वान् पदार्थान् क्रमेण परिवेविषताम्।[६]	हे पाचक लोगों! सब पदार्थों को क्रम से परोसो।
२८ भुञ्जीध्वम्।	भोजन कीजिये।
२९ भोजनस्य सर्वे पदार्थाः श्रेष्ठा जाता न वा?	भोजन के सब पदार्थ अच्छे हुए हैं वा नहीं?
३० अत्युत्तमाः सम्पन्नाः किं कथनीयम्।	क्या कहना है, बड़े उत्तम हुए हैं।
३१ भवता किञ्चित् पायसं ग्राह्यं वायस्येच्छाऽस्ति।	आप थोड़ीसी खीर लीजिये वा जिसकी इच्छा हो।
३२ प्रभूतं भुक्तं तृप्ताः स्मः।	बहुत रुचि से भोजन किया, तृप्त हो गये [हैं!]
३३ तर्ह्युत्तिष्ठत।	तो उठिये।
३४ जलं देहि।	जल दे।
३५ गृह्यताम्।	लीजिये।
३६ ताम्बूलादीन्यानीयन्ताम्।	पान बीड़े, इलायची आदि लाओ।
३७ इमानि सन्ति गृह्णन्तु।	ये हैं, लीजिये।

सभाप्रकरणम्

१ इदानीं सभायां काचिच्चर्चा विधेया।	अब सभा में कुछ वार्तालाप करना[७] चाहिये।
२ धर्म्मः किं लक्षणोऽस्तीति पृच्छामि?	मैं पूछता हूँ कि धर्म्म का क्या लक्षण है?
३ वेदप्रतिपाद्यो न्याय्यः पक्षपातरहितः सत्याचरणोधर्मोऽस्तीत्युत्तरं।	जो वेदोक्त, न्याय, पक्षपातरहित सत्याचरण है उसी को तू धर्म जान।
४ ईश्वरः कोऽस्तीति ब्रूहि।	ईश्वर किसको कहते हैं, आप कहिये?
५ यः सच्चिदानन्दस्वरूपः सत्यगुण-	जो सत् चित् आनन्दस्वरूप और जिसके

कर्मस्वभावः।	गुण, कर्म, स्वभाव सत्य ही हैं वह ईश्वर है।
६ मनुष्यैः परस्परं कथं कथं वर्त्तितव्यम्।	मनुष्यों को एक दूसरे के साथ कैसे कैसे वर्त्तना चाहिये?
७ धर्मसुशीलतापरोपकारैः सह यथायोग्यम्।	धर्म, श्रेष्ठ स्वभाव और परोपकार के साथ जिनसे जैसा व्यवहार करना हो वैसा ही सबको वर्त्तना चाहिये।

आर्य्यावर्त्तचक्रवर्त्तिराजप्रकरणम्

१ अस्मिन्नार्यावर्त्ते पुरा के के चक्रवर्त्तिराजा अभूवन्?	इस आर्य्यावर्त्त देश में पहिले कौन-कौन चक्रवर्ती राजा हुए हैं?
२ स्वायंभुवाद्या युधिष्ठिर पर्यन्ताः।	स्वायम्भुव से लेकर युधिष्ठिर पर्य्यन्त।
३ चक्रवर्त्तिशब्दस्य कः पदार्थः?	चक्रवर्ती शब्द का क्या अर्थ है।
४ य एकस्मिन् भूगोले स्वकीयामाज्ञां प्रवर्त्तयितुं समर्थाः।	जो एक भूगोल भर में अपनी राजनीतिरूप आज्ञा को चलाने में समर्थ हों।
५ ते कीदृशीमाज्ञां प्राचीचरन्?	वे कैसी आज्ञा का प्रचार करते थे?
६ यया धार्मिकाणां पालनं दुष्टानां ताड़नं च भवेत्।	जिससे धार्मिकों का पालन और दुष्टों का ताड़न होवे वैसी आज्ञा को।

राजप्रजालक्षणराजनीत्यनीतिप्रकरणम्

१ राजा को भवितुं शक्नोति?	राजा कौन हो सकता है?
२ यो धार्मिकाणां सभाया अधिपतित्वे योग्यो भवेत्।	जो धर्मात्माओं की सभा का स्वामी [सभापति] होने योग्य होवे।
३ यः प्रजां पीडयित्वा स्वार्थं साधयेत् स राजा भवितुमर्होऽस्ति न वा?	जो प्रजा को दुःख देकर अपना मतलब=[प्रयोजन] साधे वह राजा हो सकता वा नहीं?
४ नहि नहि नहि स तु दस्युः खलु।	नहीं नहीं नहीं, वह तो डाकू ही है।
५ या राजद्रोहिणी सा तु न प्रजा किन्तु स्तेनतुल्या।	जो राजव्यवहार में विरोध करे वह प्रजा तो नहीं किन्तु चोर के समान है।
६ कथं भूताः जनाः प्रजा भवितुमर्हाः?	कैसे मनुष्य प्रजा होने को योग्य हैं?

७ ये सततं राजप्रियकारिणः।	जो निरन्तर राजा के प्रियकारी हों।
८ राजपुरुषैरप्येवमेव प्रजाप्रियकारिभिः सदा भवितव्यम्।	[९]राजसम्बन्धी पुरुषों को भी वैसे ही प्रजा के प्रिय करने में सदा रहना चाहिये।

शत्रुवशकरणप्रकरणम्

१ एतैः शत्रुभिः सह कथं वर्तितव्यम्?	इनको शत्रुओं के साथ कैसे बर्तना चाहिये?
२ अरयः सामदामभेददण्डैर्वशमानेया	अरियों को साम मिलापा दाम कुछ देना भेद आपस में उनकी फूट करा और दण्ड करके वश [में] करना चाहिए।
३ सदा स्वप्रजासेनाकोषधर्मविद्यासुशिक्षा वर्द्धनीयाः।	सब दिन अपनी प्रजा, सेना,कोष, धर्म्म, विद्या और श्रेष्ठ शिक्षाबढ़ाते रहना चाहिये
४ यथाऽधर्माविद्यादुष्टशिक्षा दस्युचोरादयो न वर्द्धेरँस्तथा सततमनुष्ठेयम्।	जिस प्रकार से अधर्म, अविद्या, बुरी शिक्षा, डाकू और चोर आदि न बढ़ें वैसा निरन्तर पुरुषार्थ करना चाहिये।
५ धार्मिकैः सह कदापि न योद्धव्यम्।	धर्मात्माओं के साथ कभी युद्ध न करना चाहिये।
६ निर्जिता अपि दुष्ट विनयेन सत्कर्त्तव्याः	पराजित शत्रुओं का भी विनय के साथ मान करना चाहिये।
७ राजप्रजे अन्तः प्राणवत् परस्परं सम्पोष्य नैव कर्षणीये।	राजा और प्रजा प्राण के तुल्य एक दूसरे की पुष्टि करके सदा सुखी रहें। किन्तु एक दूसरे को निर्बल न करें।
८ कर्षिते क्षयरोगवदुभे विनश्यतः।	एक दूसरे को निर्बल करने से क्षय रोग के समान दोनों निर्बल होकर नष्ट हो जाते हैं।
९ सदा ब्रह्मचर्य विज्ञानाभ्यां शरीरात्मबल मेधनीयम्	सब काल में ब्रह्मचर्य और विज्ञान से शरीर और आत्मा का बल बढ़ाते रहना चाहिये।
१० यथादेशकालं पुरुषार्थेन यथावत् कर्माणि कृत्वा सर्वथा सुखयितव्यम्।	देश काल के अनुकूल उद्यम से ठीक ठीक कर्म करके सब प्रकार सुखी रहना चाहिये।

वैश्यव्यवहारप्रकरणम्

१ वैश्याः कथं वर्त्तेरन्?
बनिये लोग कैसे वर्त्तें।

२सर्वा देशभाषा लेखाव्यवहारं च विज्ञाय पशुपालनक्रयविक्रयादिव्यापारकुसीद–वृद्धिकृषिकर्माणि धर्मेण कुर्युः।
सब देशभाषा और हिसाब को ठीक ठीक जानकर पशुओं की रक्षा, लेन–देन आदि व्यवहार, व्याजवृद्धि और खेती कर्म धर्म के साथ करें।

कुसीदग्रहणप्रकरणम्

१ यद्येकवारं दद्याद् गृह्णीयाच्च तर्हि कुसीदवृद्धे र्द्वैगुण्ये धर्मोऽधिकेऽधर्म इति वेदितव्यम्।
जो एक बार दें लें तो व्याजवृद्धि सहित मूलधन द्विगुण तक लेने में धर्म और अधिक लेने में अधर्म होता है, ऐसा जानना चाहिये।

२ प्रतिमासं प्रतिवर्षं वा यदि कुसीदं गृह्णीयाद्यदा समूलं द्विगुणं धनमागच्छेत्तदा मूलमपि त्याज्यम्।
जो महीने महीने में अथवा वर्ष वर्ष में व्याज लेता जाय तो जब [मूल का]दूना धन आ जाय फिर आगे [मूल धन भी छोड़ देना चाहिए अर्थात्]आसामी से कुछ भी न लेना चाहिये।

नौकाविमानादिचालनप्रकरणम्

१ त्वं नौकाश्चालयसि न वा?
तू नावें चलाता है वा नहीं?

२ चालयामि।
चलाता हूँ।

३ नदीषु वा समुद्रे?
नदियों वा समुद्र में?

४ उभयत्र [चलन्ति]।
दोनों में चलती हैं।

५ कस्यां दिशि कस्मिन्देशे च गच्छन्ति?
किस दिशा और किस देश में जाती हैं?

६ सर्वासु दिक्षु पातालदेशपर्य्यन्तम्।
सब दिशाओं में पातालदेश [अर्थात् अमेरिका देश] पर्य्यन्त।

७ ताः कीदृश्यः सन्ति केन चलन्ति?
वे नौका कैसी हैं और किससे चलती हैं

८ कैवर्त्तवाय्वग्निजलकलावाष्पादिभिः।
मल्लाह, वायु, अग्नि, जल, कला यन्त्र और भाफ आदि से।

९ याः पुरुषाश्चालयन्ति ता ह्रस्वा याः महत्यस्ता वाय्वादिभिस्ता अश्वतरीश्यामकर्णाश्वायुक्ताख्याः सन्ति।	जिनको मनुष्य चलाते हैं वे छोटी छोटी नौका और जो बड़ी होती हैं वे वायु आदि से चलाई जाती हैंउनके अश्वतरी और श्यामकरणाश्वा आदि नाम हैं।
१० विमानादिभिरपि सर्वत्र गच्छाम–आगच्छामश्च	और विमान आदि से भी सर्वत्र जाया–आया करते हैं।

क्रयविक्रयप्रकरणम्

१ अस्य किंमूल्यम्?	इसका क्या मूल्य है?
२ पञ्च रूप्याणि।	पांच रुपये।
३ गृहाणेदं वस्त्रं देहि।	लीजिये पांच रुपये यह वस्त्र दीजिये।
४ अद्य घृतस्य कोऽर्घः?	आज घी का क्या भाव है?
५ मुद्रैकया सपादप्रस्थं विक्रीणते।	एक रुपये का सवा सेर बेचते हैं
६ गुड़स्य को भावः?	गुड़ का क्या भाव है?
७ द्वाभ्यामानाभ्यामेकसेटकमात्रं ददति।	दो आने का एक सेर भर देते हैं।
८ त्वमापणं गच्छ एलामानय।	तू दुकान पर जा, इलायची ले आ।
९ आनीता गृहाण।	ले आया, लीजिए।
१० कस्य हट्टे दधिदुग्धे अच्छ प्राप्नुतः?	किसकी दुकान पर अच्छा दूध और दही मिलते हैं?
११ धनपालस्य।	धनपाल की।
१२ स सत्येनैव क्रयविक्रयौ करोति।	वह सत्य ही से लेन–देन करता है।
१३ श्रीपतिर्वणिक्कीदृशोऽस्ति?	श्रीपति बनियां कैसा है?
१४ स मिथ्याकारी।	वह झूठा है।
१५ अस्मिन्संवत्सरे कियान् लाभो जाते व्ययश्च	इस वर्ष में कितना लाभ हुआ और खर्च?
१६ पंच लक्षाणि लाभो लक्षद्वयस्य व्ययश्च।	पांच लाख रुपये लाभ और दो लाख खर्च हुए।
१७ मम खल्वस्मिन् वर्षे लक्षद्वयस्य	मेरी तो इस वर्ष में दो लाख की हानि

हानिर्जाता	हो गई।
१८ कस्तूरी कस्मादानीयते?	कस्तूरी कहां से लाते हो?
१९ नेपालात्	नेपाल से।
२० दुशाला: कुत आगच्छन्ति?	दुशाले कहां से आते हैं?
२१ कश्मीरात्।	कश्मीर से।

गमनागमनप्रकरणम् [१]

१ कुत्र गच्छसि?	कहाँ जाते हो?
२ पाटलिपुत्रकम्।	पटना को।
३ कदाऽऽगमिष्यसि?	कब आओगे?
४ एकमासे।	एक महीने में।
५ स क्व गत:?	वह कहाँ गया?
६ शाकमानयनाय	शाक लाने के लिये।

क्षेत्रवपनप्रकरणम्

१ क्षेत्राणि कर्षन्तु।	खेत जोतो।
२ बीजान्युप्तानि न वा?	बीज बोये वा नहीं?
३ उप्तानि।	बो दिये।
४ अस्मिन् क्षेत्रे किमुप्तम्?	इस खेत में क्या बोया है?
५ ब्रीहय:।[१०]	[१०]धान।
६ एतस्मिन्?	इसमें?
७ गोधूमा:।	गेहूँ।
८ अस्मिन् किं वपन्ति?	इस खेत में क्या बोते हैं?
९ तिलमुद्गमाषाढ़की:।	तिल, मूंग, उड़द और अरहर।
१० एतस्मिन् किमुप्यते?	इसमें क्या बोया जाता है?
११ यवा:।[११]	जौ।

शस्यच्छेदनप्रकरणम्

१ संप्रति केदारा: पक्वा:।	इस समय खेत पक गये हैं।
२ लुनन्तु।	काटो।
३ इदानीं कृषीवला अन्योऽन्यंकेदारान्	इस समय खेती करने वाले आपस में

व्यतिलुनन्ति।	एकदूसरे का पारापारी खेतकाटते हैं।
४ ऐषमे धान्यानि प्रभूतानि जातानि।	इस साल में धान्य बहुत हुए हैं।
५ अतएवैकस्या मुद्राया गोधूमाः खारीप्रमिता अन्यानि तण्डुलादीन्यपि किञ्चदधिकन्यूनालभन्ते	इसी से एक रुपये के गेहूँ एक मन और चावल आदि अन्न भी मन से कुछेक अधिक न्यून मिलते हैं।

गवादिदोहनपरिमाणप्रकरणम्

१ इयं गौर्दुग्धं ददाति न वा?	यह गाय दूध देती है वा नहीं?
२ ददाति।	देती है।
३ इयं महिषी कियद्दुग्धं ददाति?	यह भैंस कितना दूध देती है?
४ दशप्रस्थम्।	दश सेर।
५ तव अजादयस्सन्ति न वा?	तेरे भेड़ बकरी हैं वा नहीं?
६ सन्ति।	हैं।
७ प्रतिदिनं कियद् दुग्धं जायते?	हररोज कितना दूध होता है?
८ पञ्च खार्यः।	पांच मन।
९ नित्यं किंपरिमाणे घृतनवनीते भवतः?	रोज कितना घी और मक्खन होता है?
१० सार्द्धद्वादशप्रस्थे।	साढ़े बारह सेर।
११ प्रत्यहं कियद् भुज्यते कियच्च विक्रीयते?	हररोज कितना खाया जाता और कितना बिकता है?
१२ सार्धद्विप्रस्थं भुज्यते दशप्रस्थं च विक्रीयते	अढ़ाई सेर खाया जाता और दश सेर बिकता है।

क्रयविक्रयार्घप्रकरणम्

१ रूप्यैकेन कियन् मिलति?	एक रुपये का कितना मिलता है?
२ प्रस्थत्रयम्।	तीन सेर।
३ तैलस्य कियच्छुल्कम्?	तेल का क्या भाव है?
४ मुद्राचतुर्थांशेनैकसेटकं प्राप्यते।	चार आने का एक सेर प्राप्त है।
५ अस्मिन्नगरे कति हट्टास्सन्ति?	इस नगर में कितनी दुकानें हैं?
६ पञ्चसहस्राणि।	पाँच हजार।

कुसीदप्रकरणम्

१ शतं मुद्रा देहि।	सौ रुपये दे।
२ ददामि परन्तु कियत् कुसीदं दास्यसि?	देता हूँ परन्तु कितना ब्याज देगा?
३ प्रतिमासं मुद्रार्द्धम्।	हर महीने में आठ आने।

उत्तमर्णाधमर्णप्रकरणम्

१ भो अधमर्ण! यावद्धनं त्वया पूर्व गृहीतं तदिदानीं दीयताम्।	हे ऋणिया [करजदार]! जो धन तूने पहिले लिया था वह अब दे।
२ मम सांप्रतं तु दातुं सामर्थ्यं नास्ति।	मेरा इस समय तो देने का सामर्थ्य नहीं है।
३ कदा दास्यसि?	कब देगा?
४ मासद्वयाऽनन्तरम्।	दो महिने के पश्चात्।
५ यद्येतावति समये न दास्यसि चेत्तर्हि राजनियमान्निग्राह्यग्रहीष्यामि।[१२]	जो तू इतने समय में न देगा तो राज–प्रबन्ध से पकड़ा के लूंगा।
६ यद्येवं कुर्य्यां तर्हि तथेव ग्रहीतव्यम्[१३]	जो ऐसा करूं तो वैसे ही लेना।

राजप्रजासम्बन्धप्रकरणम्

१ भोराजन्! मह्यमयं ऋणं न ददाति।	हे राजन्! मेरा यह करज [ऋण] नहीं देता।
२ यदा तेन गृहीतं तदानीन्तनः कश्चित् साक्षी वर्त्तते न वा?	जब उसने लिया था उस समय का कोई गवाह [साक्षी] है वा नहीं?
३ वर्तते।	है।
४ तर्ह्यानीयताम्।	तो लाओ।
५ आनीतोऽयमस्ति।	लाया यह है।

साक्षिप्रकरणम्

१भोः साक्षिन् त्वमत्र किमपि जानासि न वा?	हे साक्षी ! तू इस विषय में कुछ जानता है वा नहीं?
२ जानामि[१४]।	[१४]जानता हूँ।
३ यादृशं जानासि तादृशं सत्यं वद।	जैसा जानता है वैसा सच कह।
४ सत्यं वदामि।	सच कहता हूँ।
५ अस्मादनेन मत्समक्षे सहस्रं मुद्रा	इससे इसने मेरे सामने हजार रुपये

गृहीता:	लिये थे।
६ ओ भृत्य! तं शीघ्रमानय।	ओ नौकर! उसको जल्दी ले आ।
७ आनयामि।	लाता हूँ।
८ गच्छ राजगृहं राज्ञा त्वमाहूतोऽसि।	चल राजसभा में राजा ने तुझको बुलाया है
९ चलामि।	चलता हूँ।
१० भो राजन् उपस्थित: स:।	हे राजन्! वह आया है।
११ त्वयाऽस्य ऋणं किमर्थं न दीयते?	तू इसका ऋण किसलिये नहीं देता।
१२ अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यनास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि।	इस समय तो मेरा सामर्थ्य नहीं है छ: महीने के आगे दूंगा।
१३ पुनर्विलम्बन्तु न करिष्यसि?	फिर देर तो न करेगा?
१३अ– नैव	नहीं।
१४ अच्छ गच्छ धनपाल! सप्तमे मास्ययं दास्यति तदा यदि न दास्यति तर्ह्येनं निगृह्य दापयिष्यामि।	अच्छा जाओ धनपाल! [सातवें महिने में देगा]जो यह सातवें महीने में न देगा तो इसको पकड़ के दिला दूंगा।
१५ अनेन मम शतं मुद्रा गृहीता अधुना न ददाति।	इसने मेरे सौ रुपये लिये अब नहीं देता।
१६ किं च भो यदयं वदति तत् सत्यं न वा?	क्योंजी! जो यह कहता है वह सच है वा नहीं?
१७ मिथ्यैवाऽस्ति।	झूठ ही है।
१८ अहं तु जानाम्यपि नाऽस्य मुद्रा मया कदा स्वीकृता:।	मैं तो जानता भी नही कि इसके रुपये मैंने कब लिये थे।
१९ उभयोस्साक्षिण: सन्ति न वा?	दोनों के गवाह [साक्षी]लोग हैं वा नहीं हैं?
२० सन्ति।	हैं।
२१ कुत्र वर्त्तन्ते?	कहां हैं?
२२ इम उपतिष्ठन्ते।	ये खड़े हैं।
२३ अनेन युष्माकं समक्षे शतं मुद्रा दत्ता न वा?	इसने तुम्हारे सामने सौ रुपये दिये वा नहीं?
२४ दत्तास्तु खलु।	निश्चित दिये तो हैं।

२५ अनेन शतं मुद्रा गृहीता न वा?	इसने सौ रुपये लिये वा नहीं?
२६ वयं न जानीमः।	हम नहीं जानते।
२७ प्राड्विवाकेनोक्तम्–	वकील ने कहा–
२८"अयमस्य च साक्षिणः सर्वे मिथ्यावादिनः सन्ति।	"यह और इसके साक्षी लोग सब झूठ बोलने वाले हैं।
२९ कुत इदमेतेषां परस्परं विरुद्धं वचोऽस्ति।	क्योंकि यह इन लोगों का वचन आपस में विरुद्ध है।
३० यतस्त्वया मिथ्याप्रलपितमतएव तवैकसंवत्सरपर्य्यन्तं कारागृहे बन्धः क्रियते।	जिससे तूने झूठ बोला इसीकारण तेरा एक वर्ष तक बन्दीघर में बन्ध किया जाता है।
३१ अयमुत्तमर्णस्त्वदीयान् पदार्थान् गृहीत्वा विक्रीय वा स्वर्णं ग्रहीष्यति।	यह सेठ तेरे पदार्थों को लेकर अथवा बेच के अपना ऋण ले लेगा।
३२ अयं मदीयानि पञ्चशतानि रुप्याणि धृत्वा न ददाति।	यह मेरे पांच सौ रुपये लेकर नहीं देता।
३३ कुतो न ददासि?	क्यों नहीं देता?
३४ मया नैव गृहीता कथं दद्याम्?	मैंने लिये ही नही कैसे दूं?
३५ अयम्मम लेखोऽस्ति पश्य तम्[१५]	यह मेरा लेख है देखिये इसको।
३६ आनय।	लाओ।
३७ गृह्यताम्।	ले ओ।
३८ अयं लेखो मिथ्या प्रतिभाति।	यह लिखा हुआ झूठ मालूम पड़ता है।
३९ तस्मात् त्वं षण्मासान् कारागृहे वस तवेमे साक्षिणश्च द्वौ द्वौ मासौ च तत्रैव गच्छेयुः	इससे तू छः महीने बन्दीगृह में रह और तेरे ये गवाह [साक्षी] भी दो दो महीने के लिये वहीं जायें।

[१६] सेव्यसेवकप्रकरणम्

१ भो मङ्गलदास! सेवार्थं कैङ्कर्यं करिष्यसि?	हे मंगलदास! सेवा के लिये नौकरी करेगा?
२ करिष्यामि।	करूंगा।
३ किं प्रतिमासं मासिकं ग्रहीतुमिच्छसि?	प्रति महीने कितना वेतन लिया चाहता है

४ पञ्च रुप्याणि।	पांच रुपये।
५ मयैतावद्दास्यते परन्तु यथायोग्या परिचर्य्या विधेया।	मैं इतना दूंगा परन्तु ठीक ठीक सेवा करनी होगी।
६ यदाहं भवन्तं सेविष्ये तदा भवानपि प्रसन्न एव भविष्यति।	जब मैं आपकी सेवा करूंगा तब आप भी प्रसन्न ही होंगे।
७ मार्जनं कुरु[१७]।	झाड़ू दे।
८ दन्तधावनमानय।	दातून ले आ।
९ स्नानार्थं जलमानय।	नहाने के लिये जल ला।
१० उप वस्त्रं देहि।	अंगोछा दे।
११ आसनं स्थापय।	आसन रख।
१२ पाकं कुरु।	रसोई कर।
१३ हे सूद!त्वयाऽन्नं व्यञ्जनं च सुष्ठु संपादनीयम्।	हे रसोइये! तू अन्न और शाक आदि उत्तम बना।
१४ अद्य किं किं कुर्याम्?	आज क्या क्या करूं?
१५ पायसमोदकौदनसूपरोटिकाशाका–निउपव्यञ्जनानि चापि।	खीर, लड्डू, भात, दाल, रोटी, शाक और चटनी भी।

मिश्रितप्रकरणम् [१]

१ किं वेतनं दीयते?	क्या मजूरी देते हो?
२ प्रत्यहं द्वादश पणाः।	प्रतिदिन बारह पैसे।
३ वस्त्राणि श्लक्ष्णे पट्टे प्रक्षालनीयानि।	कपड़े चिकने साफ पत्थर की पटिया पर धोना।
४ गा वने चारय।	गायें वन में चरा।
५ पुष्पवाटिकायां गन्तव्यमस्ति।	फूलों की बगीची में जाना है।
६ आम्रफलानि पक्वानि न वा?	आम पके वा नहीं?
७ पक्वानि सन्ति।	पके हैं।
८ उपानहावानीयताम्	जूते लाओ।

गमनागमनप्रकरणम् [२]

१ अयं रक्तोष्णीषः क्व गच्छति?	यह लाल पगड़ीवाला कहां जाता है?

२ स्वगृहम्।	अपने घर को।
३ अस्य कदा जन्माऽभूत्?	इसका जन्म कब हुआ था?
४ पञ्च संवत्सरा अतीता:।	पांच वर्ष बीते।
५ परेद्युर्ग्रामे गन्तव्यम्	कल गांव पर जाना चाहिये।
६ गमिष्यामि[१८]।	जाऊंगा।
७ भवान् पूर्वेद्यू क्व गतोऽसि[१९]	आप कल कहां गये थे?
८ अयोध्याम्।	अयोध्या को।
९ तत्र किं कार्यमासीत्?	वहां क्या काम था?
१० मित्रै: सह मेलनं कर्त्तव्यमासीत्।	मित्रों के साथ मिलना था।
११ कदागतोऽसि?	कब आया है?
१२ अद्यैवाऽऽगच्छामि।	आज ही आया हूं।

रोगप्रकरणम्

१ अस्य कीदृशो रोगो वर्त्तते?	इसको किस प्रकार का रोग है?
२ जीर्णज्वरोस्ति।	जीर्णज्वर है।
३ ओषधं देहि।	दवा दीजिये।
४ ददामि।	देता हूँ।
५ परन्तु पथ्यं सदा कर्त्तव्यं नहि पथ्येन विना रोगो निवर्त्तते।	परन्तु पथ्य–परहेज सदा–हरदम करना चाहिये पथ्य के बिना रोग निवृत्त नहीं होता।
६ अयं कुपथ्यकारित्वात् सदा रुग्णो वर्त्तते	यह कुपथ्य–बदपरहेज करने से सदा रोगी रहता है।
७ अस्य पित्तकोपो वर्त्तते।	इसको पित्त का कोप है।
८ मम कफो वर्द्धत ओषधं देहि।	मेरे को कफ बढ़ता है, दवा दो।
९ निदानं कृत्वा दास्यामि।	रोग की परीक्षा करके दूंगा।
१० अस्य कासश्वासोऽस्ति।	इसको कासश्वास–दमा है।
११ मम शरीरे तु वातव्याधिर्वर्त्तते	मेरे शरीर में तो वात की व्याधि है।
१२ सङ्ग्रहणी निवृत्ता न वा?	संग्रहणी छूटी वा नहीं?
१३ अद्यपर्यन्तं तु न निवृत्ता खलु।	आज तक तो नहीं छूटी।
१४ ओषधं संसेव्य पथ्यं करोषि न वा?	दवा का सेवन करके पथ्य करते हो वा नहीं?

१५ क्रियते परन्तु सुवैद्यो नास्ति कश्चिद्यः सम्यक् परीक्ष्यौषधं दद्यात्।	करता हूँ परन्तु अच्छा वैद्य नहीं है कोई जो अच्छे प्रकार परीक्षा करके दवा दे।
१६ तृषाऽस्ति चेज्जलं पिब।	प्यास हो तो जल पी।

मिश्रितप्रकरणम् [२]

१ इदानीं शीतं निवृत्तम् उष्णसमय आगतः।	अब तो शीत की निवृत्ति होकर गरमी का समय आया।
२ हेमन्ते क्व स्थितः?	जाड़े में कहां रहा था?
३ वंगेषु[२०]।	[२०]बङ्गाल में।
४ पश्य! मेघोन्नतिं कथं गर्जति विद्योतते च।	देखो!मेघ की बढ़ती, कैसा गर्जता और चमकता है।
५ अद्यमहती वृष्टिर्जाता यया तडागा नद्यश्च पूरिताः।	आज बड़ी वर्षा हुईजिससे तालाब और नदियां भर गई।
६ शृणु, मयूराः सुशब्दयन्ति।	सुनो, मोर अच्छा शब्द करते हैं।
७ कस्मात् स्थानादागतः?	किस स्थान से आया?
८ जङ्गलात्।	जङ्गल से।
९ तत्र त्वया कदापि सिंहो दृष्टो न वा?	वहां तूने कभी सिंह देखा था वा नहीं?
१० बहुवारं दृष्टः।	कई दफे [बार] देखा।
११ नदी पूर्णा वर्त्तते कथमागतः?	नदी भरी है, कैसे आया?
१२ नौकया।	नाव से।
१३ आरोहत हस्तिनं गच्छेम।	चढ़ो हाथी पर, जायें।
१४ अहं तु रथेनागच्छामि।	मैं तो रथ से आऊंगा।
१५ अहमश्वोपरि स्थित्वा गच्छेयं शिविकायां वा?	मैं घोड़े पर चढ़ के जाऊंअथवा पालकी पर?
१६ पश्य! शारदं नभो निर्मलम्।	देखो!शरद ऋतुके निर्मल आकाश को।
१७ कथं निर्मलं वर्त्तते।	कैसा निर्मल है।
१८ चन्द्र उदितो न वा?	चन्द्रमा उगा वा नहीं?

१९ इदानीन्तु नोदितः खलु।	इस समय तो नहीं उगा है।
२० कीदृशास्तारकाः प्रकाशन्ते।	किस प्रकार के तारे प्रकाशमान हो रहे हैं
२१ सूर्योदयाच्चलन्नागच्छामि।	सूर्योदय से चलता हुआ आता हूँ।
२२ क्वापि भोजन कृतं न वा?	कहीं भोजन किया वा नहीं?
२३ कृतम्मध्याह्नात् प्राक्।	किया था दोपहर से पहिले।
२४ अधुनाऽत्र कर्त्तव्यम्।	अब यहां करो।
२५ करिष्यामि।	करुंगा।

विवाहस्त्रीपुरुषालापप्रकरणम्

१ त्वया कीदृशो विवाहः कृतः?	तूने किस प्रकार का विवाह किया था?
२ स्वयंवरः।	स्वयंवर।
३ स्त्र्यऽनुकूलाऽस्ति न वा?	स्त्री अनुकूल है वा नहीं?
४ सर्वथाऽनुकूला	सब प्रकार से अनुकूल है।
५ कत्यऽपत्यानि जातानि?	कितने लड़के [=सन्तान] हुए?
६ चत्वारः पुत्रा द्वे कन्यके च।	चार पुत्र और दो कन्या।
७ भो स्वामिन् नमस्ते।	स्वामीजी! नमस्ते,
८ नमस्ते प्रिये!	नमस्ते प्रिया!
९ कांचित्सेवामनुज्ञापय।	कोई सेवा की आज्ञा दीजिये।
१० सर्वथा सेवयसि किमनुज्ञापयेयम्।	सब प्रकार की सेवा करती हो क्या आज्ञा करें।
११ अद्य भवाञ्च्छ्रमं कृतवानत उष्णेन जलेन स्नापयिष्यामि।	आज आपने श्रम किया है, इस लिये गरम जल से नहवाऊंगी।
१२ गृहाणेदं जलमासनं च।	लीजिये यह जल और आसन।
१३ इदानीं भ्रमणाय गन्तव्यम्।	इस समय घूमने के लिये जाना चाहिये।
१४ क्व गच्छेव?	कहा जायें?
१५ उद्यानेषु।	बगीचों में।

स्त्रीश्वश्रू श्वशुरादिसेव्यसेवकप्रकरणम्

१ हे श्वश्रु! सेवामाज्ञापय किं कुर्याम?	हे सास! सेवा की आज्ञा करिये क्या करूं
२ सुभगे! जलं देहि।	सुभगे! जल दे।

३ गृहाणेदमस्ति।	लीजिये, यह है।
४ हे श्वशुर! भवान् किमिच्छत्याज्ञापय।	हे श्वसुर! आपकी क्या इच्छा है आज्ञा दीजिये।
५ हे वंशवदेत्वत्सेवयां संतुष्टोस्मि।	हे वंशवदे तेरी सेवा से संतुष्ट हूँ।

ननन्दभ्रातृजायासंवादप्रकरणम्

१ हे ननन्दरिहागच्छ वार्त्तालापं कुर्याव।	हे ननन्द! यहां आओ बातचीत करें।
२ वद भ्रातृजाये! किमिच्छसि?	कहो भौजाई! क्या इच्छा है?
३ तव पतिः कीदृशोऽस्ति?	तेरा पति किस प्रकार का है?
४ अतीव सुखप्रदो यथा तव।	अत्यन्त सुख का देने वाला है, जैसा तेरा।
५ ममेदृशः पतिः सुभाग्येन लब्ध।	मैंने इस प्रकार का पति अच्छेभाग्य से पाया है।
६ कदाचित्किंचिदप्रियं तु न करोति?	कभी कोई अप्रिय आचरण तो नहीं करता?
७ नैव?	नहीं?
८ कदापि नहि किन्तु सर्वदा प्रीतिं वर्द्धयति[१]	कभी नहीं किन्तु सब दिन प्रीति बढ़ता है।
९ पश्याभ्यां बाल्यावस्थायां विवाहः कृतोऽतः सदा दुःखितौ वर्त्तते।	देखो इन दोनों ने बाल्यावस्था में विवाह किया है, इससे सदा दुःखी रहते हैं।
१० यान्यपत्यानि जातानि तान्यपि रुग्णानिअग्रेऽपत्यस्याऽऽशैव न निर्बलत्वात्।	जो लड़के हुए वे भी रोगी हैं, आगे लड़का होने की आशा ही नहीं है निर्बलता से
११ पश्य तव मम च कीदृशानि पुष्टान्यपत्यानि द्विवर्षानन्तरं जायन्ते।	देखो!तेरे और मेरे कैसे पुष्ट लड़के दो वर्ष के बाद होते जाते हैं।
१२ सर्वदा प्रसन्नानि सन्ति वर्द्धन्ते [च] सुशीलत्वात्।	सब काल में प्रसन्न [और] बढ़ते जाते हैं सुशीलता से।
१३ नह्यस्मिन् संसारेऽनुकूलस्त्रीपतिजन्यसदृशं सुखं किमपि विद्यते।	इस संसार में अनुकूल स्त्री और पुरुष से होनेवाले सुख के सदृश दूसरा सुख कोई नहीं है।
१४ इदानीं वृद्धाऽवस्था प्राप्ता यौवनं गतं केशाः श्वेता जाताः प्रतिदिनं बलं ह्रसति च।	इस समय वृद्धावस्था आई,जवानी गई, बाल सफेद हुए और नित्य प्रति बल घटता है।

१५ सोद्य गमनागमनमपि कर्तुमशक्तो जातः[२२]।	वह इस समय आने–जाने में भी असमर्थ हो गया है।
१६ बुद्धिर्विपर्यासत्वाद्विपरीतं भाषते।	बुद्धि के विपरीत होने से उलटा बोलता है।
१७ अद्याऽस्य मरणसमय आगतः ऊर्ध्वश्वासत्वात्।	आज इसके मरने का समय आया, ऊपर को श्वास के चलने से।
१८ सोऽद्य मृतः।	वह आज मर गया।
१९ नीयतां श्मशानं वैदमन्त्रैर्घृतादि–भिर्दह्यताम्	ले चलो श्मशान को, वेदमन्त्रों करके घी आदि सुगन्ध से दहन करो।
२० शरीरं भस्मीभूतं जातमतस्तृतीयेऽहनि सभस्मास्थि संचयनं कार्यमेते कृत्वा पुनस्तन्निमित्तं शोकादिकं किंचिदपि नैव कार्यम्।	शरीर भस्म हो गया, आज से तीसरे दिन राख सहित हाड़ों को वेदी से अलग करके फिर उसके निमित्त शोकादि कुछ भी न करना चाहिये।
२१ त्वं मातापित्रोः सेवां न करोष्यतः कृतघ्नी वर्त्तसेऽतो मातापितृसेवा केनापि नैव त्याज्या।	तू मातापिता की सेवा नहीं करता इस कारण कृतघ्नी है, इसलिए माता–पिता की सेवा का त्याग किसी को कभी न करना चाहिये।

सायंकालकृत्यप्रकरणम्

१ इदानीन्तु सन्ध्यासमय आगतः सायं–सन्ध्यामुपास्य भोजनं कृत्वा भ्रमणं कुरुत	अब तो सन्ध्या समय आया, [सायं]सन्ध्योपासन और भोजन करके घूमना–घामना करो।
२ अद्य त्वया कियत् कार्यं कृतम्?	आज तूने कितना काम किया?
३ एतावत्कृतमेतावदवशिष्टमस्ति।	इतना किया और इतना शेष है।
४ अद्य कियानलाभो व्ययश्च जातः?	आज कितना लाभ और खर्च हुआ?
५ पञ्चशतानि मुद्रा लाभः सार्द्धद्वे शते व्ययश्च।	पांच सौ रुपये लाभ और अढ़ाई सौ खर्च हुए।
६ इदानीं सामगानं क्रियताम्।	इस समय सामवेद का गान कीजिये।
७ वीणादीनि वादित्राण्यानीयताम्।	वीणादिक बाजे ले आओ।

८ आनीतानि।	लाये।
९ वाद्यताम्।	बजाओ।
१० गीयताम्।	गाओ।
११ कस्य रागस्य समयो वर्त्तते?	किस राग का काल है?
१२ कल्याणस्य[२३]।	कल्याण का।
१३ इदानीं दशघटिकाप्रमिता रात्र्या गता शयीरन्।	इस समय दश घड़ी रात बीती सोइये।
१४ गम्यतां स्वस्वस्थानम्।	जाओ अपने अपने जगह को।
१५ स्वस्वशय्यायां शयनं कर्त्तव्यम्।	अपने अपने बिछौने पर सोना चाहिये।
१६ सत्यमेवमेतदीश्वर कृपया सुखेन[२४] रात्रिर्गच्छतु प्रभात आगच्छतु।[२४]	सत्य है, ऐसे ही ईश्वर की कृपा से सुख से रात बीते और सवेरा हो।

शरीराऽवयवप्रकरणम्

१ अस्य शिरः स्थूलं वर्त्तते।	इसका शिर बड़ा है।
२देवदत्तस्य मूर्द्धनिकेशाः कृष्णः वर्त्तन्ते	देवदत्त के शिर के बाल काले हैं।
३ मम तु खलु श्वेताः जाताः।	मेरे तो सुफेद हो गये।
४ तवापि केशा अर्द्धश्वेताः	तेरे भी बाल आधे सुफेद हैं।
५ अस्य ललाटं सुन्दरमस्ति।	इसका कपाल सुन्दर है।
६ अयं शिरसि खल्वाटः।	इसके शिर में बाल नहीं हैं।
७ तस्यमुत्तम भ्रुवौ स्तः।	उसकी अच्छी भौहें हैं।
८ श्रोत्रेण शृणोषि न वा?	कान से सुनता है वा नहीं?
९ शृणोमि।	सुनता हूँ।
१० अनया स्त्रिया कर्णयोः प्रशस्तान्या भूषणानि धृतानि।	इस स्त्री ने कानों में अच्छेसुन्दर गहने पहिने हैं।
११ किमयं कर्णाभ्यां बधिरोऽस्ति?	क्या यह कानों से बहिरा है?
१२ बधिरस्तु न परन्तु श्रवणाय ध्यानं न ददाति।	बहिरा तो नहीं है परन्तु सुनने के लिये ध्यान नहीं देता वा ख्याल नहीं करता।
१३ अयं विशालाक्षः।	यह बड़े नेत्रवाला है।
१४ त्वं चक्षुषा पश्यसि न वा?	तू आंख से देखता है वा नहीं?

१५ पश्यामि तु परन्त्विदानीं मन्ददृष्टि र्जातोहमस्मि।	देखता तो हूँ, परन्तु इस समय मन्ददृष्टि अर्थात् थोड़ी दृष्टिवाला हो गया हूँ।
१६ इदानीन्ते रक्ते अक्षिणी कथं वर्त्तते?	इस समय तेरी आँखे लाल क्यों हैं?
१७ यतोऽहं शयनादुत्थितः।	सोके उठा हूँ इस कारण से।
१८ स काणः धूर्तोऽस्ति।	वह काना बदमाश है।
१९ द्रष्टव्यमयमन्धः सचक्षुष्कवत् कथं गच्छति?	देखो, यह अन्धा आँखवाले के समान कैसे जाता है?
२० तवाऽक्षिणी कदा नष्टे?	तेरी आँखे कब नष्ट हुई?
२१ यदाऽहं पञ्चवर्षोऽभवम्।	जब मैं पांच वर्ष का हुआ था।
२२ इदानीम्मन्नेत्रे रोगोऽस्ति स कथं निवर्त्स्यते?	इस समय मेरे नेत्र में रोग है,वह कैसे निवृत्त होगा?
२३ अञ्जनादीन्योषधान्युषित्वा निवर्त्तिष्यते	अञ्जन आदि औषध के सेवन से निवृत्त होगा।
२४ तस्य नासिकोत्तमास्ति।	उसकी नाक अति सुन्दर है।
२५ भवानपि शुकनासिकः।	आप भी सुग्गे के सी नाकवाले हैं।
२६ घ्राणेन गन्धं जिघ्रसि न वा?	नाक से गन्ध को सूंघते हो वा नहीं?
२७ श्लेष्मकफत्वान्मया नासिकया गन्धो न प्रतीयते।	सरदी कफ [जुकाम]होने से मुझको नासिका से गन्ध की प्रतीति नहीं होती।
२८ अयं पुरुषः सुष्ठु कपोलोऽस्ति।	यह आदमी अच्छे गालवाला है।
२९ अतिस्थूलत्वादस्य नाभिर्गम्भीरा[२५]।	[२५]बहुत मोटा होने से इसकी नाभि गहरी है
३० त्वमद्य प्रसन्नमुखो दृश्यसे किमत्र कारणम्?	तू आज प्रसन्नमुख दिखाई देता है इसका क्या कारण है?
३१ अयं सदैवाह्लादितवदनो विद्यते।	यह सब दिन प्रसन्नमुख बना रहता है।
३२ अस्यौष्ठौ श्रेष्ठौ वर्त्तते।	इसके ओष्ठ बहुत अच्छे हैं।
३३ अयंलम्बौष्ठत्वाद्भयङ्करोस्ति।	यह लम्बे ओष्ठवाला है इससे भयङ्कर है
३४ सर्वैर्जिह्वया स्वादो गृह्यते।	सब लोग जिह्वा से स्वाद का ग्रहण किया करते हैं।

३५ वाचा च सत्यं प्रियं मधुरं सदैव वाच्यम्।	वाणी से सत्य, प्रिय और मधुर सब दिन बोलना चाहिये।
३६ नैव केनचित्खल्वनृतादिकं वक्तव्यम्।	कभी किसी को झूठ नहीं बोलना चाहिये।
३७ अयं सुदन् वर्त्तते।	यह अच्छे सुन्दर दांतोंवाला है।
३८ तव दन्ता दृढाः सन्ति वा चलिताः?	तेरे दांत दृढ़ हैं वा चलते हैं?
३९ मम तु दृढा अस्य तु त्रुटिताः सन्ति।	मेरे तो दृढ़ हैं अर्थात् जवर हैं इस के तो टूट गये हैं।
४० मन्मुख एकोऽपि दन्तो नास्त्यतः कष्टेन भोजनादिकं करोमि।	मेरे मुख में एक भी दांत नहीं है इससे क्लेश से भोजन करता हूँ।
४१ अस्य श्मश्रूणि लम्बीभूतानि सन्ति।	इसकी मूंछे लम्बी हैं।
४२ अस्य हनुर्महान् वर्त्तते।	इसकी ठोड़ी बड़ी है।
४३ तव चिबुकस्योपरि केशा न्यूनाः सन्ति	तेरी ठोड़ी के ऊपर बाल थोड़े हैं।
४४ त्वयाकण्ठ इदं किमर्थं बद्धमस्ति?	तूने गले में यह किसलिये बांधा है?
४५ अस्योरू विस्तीर्ण मस्ति।	इसकी जांघ अच्छी तैयार हैं।
४६ त्वया हृदय किं लेपिताम्?	तूने छाती में क्या लगाया है?
४७ इदानीं हेमन्तोऽस्त्यतः केशर कस्तूरी लेपिते।	इस समय हेमन्त ऋतु है,इसलिये केसर और कस्तूरी लगाई है।
४८ तथा हृच्छूलनिवारणायौषधम्।	वैसे ही हृदयशूल निवारण के लिये औषध।
४९ माणवकः स्तनाद् दुग्धं पिबति।	बालक स्तन से दूध पीता है।
५० पश्य! देवदत्तायं स्थूलोदरो[२६] वर्त्तते।	देख! देवदत्त यह बड़े पेटवाला अर्थात् तोंदवाला है।
५१ अयं तु खलु क्षामोदरः।	यह तो छोटे पेटवाला है?
५२ तव पृष्ठे किं लग्नमस्ति?	तेरे पीठ में क्या लगा है?
५३ किं स्कन्धाभ्यां भारं वहसि?	क्यों कन्धों पर बोझा ढोता है?
५४ पश्याऽस्य क्षत्रियस्य बाह्वोर्बलं येन स्वभुजबलप्रतापेन राज्यं वर्द्धितम्।	देख! इस क्षत्रिय का बाहुबल अर्थात् बांह का जोर जिसनेअपने बाहुबल के प्रताप से राज्य को बढ़ाया है।

५५ मनुष्येण हस्ताभ्यामुत्तमानि धर्म्य–कार्याणि सेव्यानि नैव कदाचिदधमानि।	मनुष्य हाथों से उत्तम धर्मयुक्त कर्म करे, न कभी अधम कर्मों को।
५६ अस्य करपृष्ठे करतले च घृतं लग्नमस्ति	इसके हाथ की पीठ और तले [हथेली] में घी लगा है।
५७ मुष्टिबन्धने एकत्रैकाङ्गु ष्ठ एकत्र चतुरङ्गु लयः भवन्ति।	मूंठी बांधने में एक ओर अंगूठा और एक ओर चार अंगुली होती हैं।
५८ शरीरस्य मध्यभागो नाभिः पुरतः पश्चिमतः कटिः कथ्यते।	शरीर के आगे[के]बीच भाग को नाभि और पीछे के भाग को पीठ[कमर] कहते हैं।
५९ अयं मल्लः स्थूलोरुः।	यह पहलवान मोटी जंघावाला है।
६० माणवको जानुभ्यां गच्छति।	लड़का घुटनों के बल से चलता है।
६१ अद्यातिगमनेन जङ् घे पीडिते स्तः।	आज बहुत चलने से जांघे दूखती हैं।
६२ अहं पद्भ्यां ह्यो ग्राममगम्।	मैं पैदल कल गांव को गया था।
६३ अस्य शरीरे दीर्घाणि लोमानि सन्ति तव शरीरे च न्यूनानि सन्ति।	इसके शरीर में बड़े रोएं हैं। और तेरे शरीर में थोड़े रोएं हैं।
६४ अस्य शरीरेचर्म श्लक्ष्णं वर्त्तते।	इसके शरीर का चमड़ा चिकना है।
६५ पश्यास्य नखा आरक्ताः सन्ति।	देख, इसके नख कुछ कुछ लाल हैं।
६६ अयं दक्षिणेन हस्तेन भोजनं वामेन जलं च पिबति।	यह दाहिने हाथ से भोजन और बायें हाथ से जल पीता है।
६७ इदानीं त्वया श्रमः कृतोऽस्त्यतो धमनी शीघ्रं चलति।	इस समय तूने श्रम किया है, इससे नाड़ी शीघ्र चलती है।
६८ अधुना तु ममान्तस्त्वग् दह्यतेऽस्थिषु पीडापि वर्त्तते।	इस समय मेरे भीतर की त्वचा जलती और हाड़ो में पीड़ा भी है।

राजसभाप्रकरणम्

१ तिष्ठ देवदत्ताहं! त्वया सह राजसभाम् गच्छामि।	ठहर देवदत्त! तेरे साथ मैं भी राजसभा को चलता हूँ।
२ सभाशब्दस्य कोर्थः?	सभा शब्द का क्या अर्थ है?
३ या सत्यासत्यनिर्णयाय प्रकाशयुक्ता वर्त्तेत।	जो सच–झूठ के निर्णय करने के लिये प्रकाश के सहित हो।

४ तत्र कति सभासदः सन्ति?	वहां कितने सभासद् हैं?
५ सहस्रम्।	हजार।
६ या मम ग्रामे सभास्ति तत्र खलु पञ्चाशत् सभासदः सन्ति।	जो मेरे ग्राम में सभा है उसमें तो पांच सौ सभासद् हैं।
७ इदानीं सभायां कस्य विषयस्योपरि विचारो विधातव्य?	इस समय सभा में किस विषय पर विचार करना चाहिये?
८ युद्धस्य।	युद्ध का अर्थात् लड़ाई का।
९ तेन सह युद्धं कर्त्तव्यं न वा?	उसके साथ युद्ध करना चाहिये वा नहीं?
१० यदि कर्त्तव्यं तर्हि कथम्?	यदि करना चाहिए तो कैसे?
११ यदि स धर्मात्मा तदा तु न कर्त्तव्यम्।	यदि वह धर्मात्मा हो तब तो उससे युद्ध करना योग्य नहीं।
१२ पापिष्ठश्चेत्तर्हि तेन सह योद्धव्यमेव।	और जो वह पापी हो तो उसके साथ युद्ध करना ही चाहिये।
१३ सोऽन्यायेन प्रजां सततं पीडयत्यतो महापापिष्ठः।	वह अन्याय से प्रजा को निरन्तर पीड़ा देता है, इस कारण से बड़ा पापी है।
१४ एवं चेत्तर्हि शस्त्रास्त्रप्रक्षेपयुद्धकुशला–बलिष्ठा कोशधान्यादिसामग्रीसहिता सेना युद्धाय प्रेषणीया।	यदि ऐसा है तो शस्त्रअस्त्र फेंकने वा चलाने और युद्ध में कुशल, बड़ी लड़ने वाली, खजाना और अन्नादि सामग्री सहित सेना युद्ध केलिये भेजना चाहिये।
१५ सत्यमेवात्र वयं सम्मतिं दद्मः।	सच ही है, इसमें हम सब लोग सम्मति वा सलाह देते हैं।
१६ इदानीं कस्यां दिशि कैषां सह युद्धं वर्त्तते	इस समय किस दिशा में किन के साथ युद्ध होता है।
पश्चिमायां दिशि यवनैः सह	पश्चिम दिशा में मुसलमानों के साथ
१७ हरिवर्षस्थानाम्।	हरिवर्षस्थ अर्थात् यूरोपियन अंग्रेज लोगों का।
१८ पराजिता अपि यवना अद्याप्युपद्रवं न त्यजन्ति।	हारे हुए मुसलमान लोग अब भी उपद्रव नहीं छोड़ते।
१९ अयं खलु पशुपक्षिणामपि स्वभावोऽस्ति	यह तो पशु–पक्षियों का भी स्वभाव है

यदा कश्चित्तद्गृहादिकं ग्रहीतुमिच्छेत् तदा यथाशक्ति युध्यन्त एव।	किजब कोई उनके घर आदि को छीन लेने की इच्छा करता है तब यथाशक्ति युद्ध करते अर्थात् लड़ते ही हैं।

ग्राम्यपशुप्रकरणम्

१ भो गोपाल! गा वने चारय।	हे अहीर! गौओं को वन में चरा।
२ तत्र या धेनवस्ताभ्योऽर्द्धं दुग्धं त्वया दुग्ध्वा स्वामिभ्यो देयमर्द्धं च वत्सेभ्यः पाययितव्यम्।	वहाँ जो गौयें हैं उनसे आधा दूध दुह कर तू मालिक को ग्रहण कराओ अर्थात् दो और आधा बछड़ों को पिला।
३ एतौ वृषभौ रथे योजयितुं योग्यौ स्तः।	ये दोनों बैल गाड़ी में वा रथ जोतने के योग्य हैं।
४ इमौ हले खलु।	और ये दोनों हल ही में।
५ पश्येमाः स्थूला महिष्यो वने चरन्ति।	देख, ये मोटी भैसें वन में चरती हैं।
६ आगच्छ भो! द्रष्टव्यम्महिषाणां युद्धं परस्परं कीदृशं भवति।	आओ जी! देखो भैसों का युद्ध आपस में किस प्रकार हो रहा है।
७ अस्य राज्ञो बह्वः उत्तमा अश्वाः सन्ति।	इस राजा के यहाँ बहुत से उत्तम घोड़े हैं
८ किमियं राज्ञः सतुरङ्गा सेना गच्छति?	क्या यह राजा की घोड़ों सहित सेना जा रही है?
९ श्रोतव्यं हरयः कीदृशं ह्रेषन्ते।	सुनिये,घोड़े किस प्रकार हिनहिनाते हैं
१० यथा हस्तिनः स्थूलाः सन्ति तथा हस्तिन्योऽपिः।	जैसे हाथी मोटे हैं वैसे हथिनी भी।
११ नागाः समं गच्छन्ति।	हाथी बराबर चाल से चलते हैं।
१२ शृणु, करिणः कीदृशं शब्दयन्ति।	सुन, हाथी कैसा शब्द करते हैं।
१३ पश्येमे गजोपरि स्थित्वा गच्छन्ति।	देख, ये हाथी पर बैठ कर जाते हैं।
१४ अस्य राज्ञः कतीभास्सन्ति?	इस राजा के यहाँ कितने हाथी हैं?
१५ पञ्च सहस्राणि।	पांच हजार।
१६ रात्रौ श्वानो बुक्कन्ति।[२७]	रात में कुत्ते भूंसते [भोंकते] हैं।
१७ प्रातः कुक्कुटाः संप्रवदन्ति।[२८]	सवेरे मुरगे बोलते हैं।
१८ मार्जारो मूषकानत्ति।	बिल्ला मूसों को खाता है।

१९ कुलालस्य गर्द्दभा अतिस्थूलाः सन्ति।	कुम्हार के गदहे अत्यन्त मोटे हैं।
२० शृणु, लम्बकर्णा रेकन्ते।	सुन, लम्बे कानों वाले गदहे रेंकते हैं।
२१ ग्राम्यशूकराः पुरीषं भक्षयित्वा भूमिं शुन्धन्ति।	गांव के सूवर मैला खाके भूमि को शुद्ध करते हैं।
२२ उष्ट्रा भारं वहन्ति।	ऊंट बोझा ढ़ोते हैं।
२३ अजाविपालोऽजा अवीर्दोग्धि।	गड़रिया बकरी और भेड़ों को दुहता है
२४ पशवोऽपुर्नद्यां जलम्।	पशुओं ने नदी में जल पिया।
२५ रक्तमुखो वानरोऽतिदुष्टो भवति कृष्णस्तु श्रेष्ठः खलु।	लाल मुख का बन्दर बड़ा दुष्ट और काले मुंह का लंगूर तो अच्छा होता है
२६ वानरी मृतकमपि बालकं न त्यजति।	बन्दरी मरे हुए भी बच्चे को नहीं छोड़ती।
२७ गोपालेन गावो दोहिता न वा?	ग्वाले ने गौ दुही वा नहीं?
२८ कपिलाया गोर्मधुरं पयो भवति।	कपिला गाय [भूरे रंगे की गाय] का दूध मीठा होता है।
२९ अयं वृषभः कियता मूल्येन क्रीतः।	यह बैल कितने मोल से खरीदा है?
३० शतेन रूप्यैः।	सौ रुपयों से।
३१ कतिभिः कार्षा पणैः प्रस्थं पयो मिलति	कितने पैसों से सेर दूध मिलता है?
३२ द्वाभ्यां पणाभ्याम्।	दो पैसों से।
३३ पश्य देवदत्त! वानराः कथंप्लवन्ते?	देख, देवदत्त! बन्दर कैसे कूदते हैं?
३४ अयं महाहनुत्वाद्धनुमान्वर्त्तते।	यह बन्दर बड़ी ठोड़ीवाला होने से हनुमान् है।

ग्रामस्थपक्षिप्रकरणम्

१ एताभ्यां चटकाभ्यां प्रासादे नीडं रचितम्	इन चिड़ियों ने अटारी पर घोंसला बनाया है।
२ अत्राण्डानि धृतानि।	यहां अण्डे धरे हैं।
३ इदानीं तु चाटकैरा अपि जाताः।	अब तो इनके बच्चे भी हो गये हैं।
४ पश्य, विष्णुमित्र! कुक्कुटयोर्युद्धम्।	देख, विष्णुमित्र! मुरगों की लड़ाई।
५ कुक्कुटी[२९] स्वानण्डान्सेवते।	मुरगी अपने अण्डों को सेवती है।
६ पश्य, शुकानां समूहश्शब्दयन्नुड्डीयते।	देख, सुग्गों के झुण्ड शब्द करते उड़े जाते हैं।

७ रात्रौ काका न वाश्यन्ते।[३०]	रात में कौवे नहीं बोलते हैं।
८ भो भृत्य ताडयानेनध्वाक्षं मे पेयजलपात्रे चञ्चु निक्षिप्य जलं विनाशितम्।	अरे नौकर, कौवे को उड़ादे,इसने मेरे पीने के जल के बरतन में चोंच डाल कर जल नष्ट [दूषित] कर दिया।
९ वायसेन बालकहस्ताद्रोटिका हृता।	कौवे ने लड़के के हाथ से रोटी लेली।
१० पश्य, कीदृशं काकोलूकं युद्धं प्रवर्त्तते	देख, किस प्रकार कौवे और उल्लुओं की लड़ाई हो रही है।
११ अनेन शुकहंसतित्तिरिकपोताः पालिताः।	इसने सुग्गा, हंस, तीतर और कबूतर पाले हैं।

वन्यपशुप्रकरणम्

१ वने रात्रौ सिंहाः गर्जन्ति।	वन में रात के समय सिंह गर्जते हैं।
२ शार्दूलं दृष्ट्वा सिंहाः निलीयन्ते।	शार्दूल को देखकर सिंह छिप जाते हैं।
३ ह्य सिंहेन गौर्हता।	कल सिंह ने गौ को मार डाला।
४ परश्वो विक्रमवर्मणा सिंहो हतः।	परसो विक्रम क्षत्रिय ने सिंह को मारा।
५ द्रष्टव्यं हस्तिसिंहयोरणम्।	देखिये, हाथी और सिंह की लड़ाई।
६ जङ्गले हस्तिसमुदाया विचरन्ति।	जंगल में हाथियों के झुण्ड घूमते हैं।
७ इदानीमेव वृकेण मृगो गृहीतः।	अभी भेड़िये ने हिरन को पकड़ लिया।
८ अयं कुक्कुरो बलवाननेन सिंहेन सहाप्याजः कृतः।	यह कुत्ता बड़ा बलवान् है, इसने सिंह के साथ भी लड़ाई की।
९ पश्य, सिंहवराहयोः संग्रामम्।	देख, सिंह और सूवर का युद्ध।
१० शूकरा इक्षुक्षेत्राणि भक्षित्वा विनाशयन्ति।	शूकर ऊख के खेतों को खाकर नष्ट कर देते हैं।
११ पश्य, वेगेन धावतो मृगान्।	देख, वेग से दौड़ते हुए हिरनों को।
१२ अयं रुरुर्वृषभवत्स्थूलोस्ति।	यह काला रोझ [एक प्रकार का काला हिरन] बैल के समान मोटा है
१३ यो निलीयोत्प्लुत्य धावति स शशस्त्वया दृष्टो न वा?	जो छाप कर कूद के दौड़ता है वह शशा तूने देखा है वा नहीं?

१४ बहून् दृष्टवान्।	बहुतों को देखा है।
१५ कदाचिद्भालवोऽपि दृष्टा न वा?	कभी भालुओं को भी देखा है वा नहीं?
१६ एकदा ऋच्छेन साकं मम युद्धं जातम्।	एक समय रीछ के साथ मेरी लड़ाई हुई थी।
१७ रात्रौ शृगालाः रुवन्ति।	रात्रि में सियार रोते हैं।
१८ कदाचित्खड्गोपि दृष्टो न वा?	कभी गैंडा भी देखा वा नहीं?
१९ य आरण्याः महिषा बलवन्तो भवन्ति तान्कदाचिद् दृष्टवान्न वा?	जो बनेले [अरणे] भैंसे बलवान् होते हैं उनको कभी देखा वा नहीं?

वनस्थपक्षिप्रकरणम्

१ कदाचित् सारसावपि उड्डीयतौ क्रीडन्तौ महाशब्दं कुरुतः।	कभी सारस पक्षी भी उड़ते और क्रीडते हुए बड़े शब्द करते हैं।
२ श्येनेनातिवेगेन बटेरोहतः।	बाज ने बड़े वेग से बटेर को मारा।
३ शृणु, तित्तिरयः कीदृशं मधुरं वदन्ति	सुन, तीतिर किस प्रकार मधुर बोलते हैं
४ वसन्ते पिकाः प्रियं शब्दयन्ति।	वसन्त ऋतु में कोयल प्रियशब्द करती हैं
५ काककोकिलवद् दुर्वचाः सुवाक् च मनुष्यो भवति।	कौवे और कोयल के सदृश दुष्ट और अच्छा बोलनेवाला मनुष्य होता है।
६ अयं देवदत्तो हंसगत्या[३१] गच्छति।	यह देवदत्त हंस के समान चलता है।
७ पश्येमे मयूरा नृत्यन्ति।	देख, ये मोर नाचते हैं।
८ उलूका रात्रौ प्रचरन्ति।	उल्लू रात को विचरते हैं।
९ पश्य, बकः सरस्सु पाखण्डिजनवतमत्स्य घाताय कथं ध्यायति?	देख, बगुला तालाबों में पाखण्डी मनुष्य के तुल्य मछली मारने के लिये किस प्रकार ध्यान कर रहा है?
१० बलाका अप्येवमेव जलजन्तून् घ्नन्ति	बलाका भी इसी प्रकार जलजन्तुओं को मारती हैं।
११ पश्य, कथञ्चकोरा धावन्ति?	देख, किस प्रकार चकोर दौड़ते हैं?
१२ येऽत्यूर्ध्वमाकाशे गत्वा मांसाय निपतन्ति ते गृध्रास्त्वया दृष्टा न वा?	जो बहुत ऊपर आकाश मेंजाकर मांस के लिये गिरते हैं उन गीधों को तूने देखा है वा नहीं?

१३ मैनका मनुष्यवद्वदन्ति।	मैना मनुष्य के समान बोलती हैं।
१४ चिल्लिका माणवकहस्ताद्रोटिकां छित्वोड्डीयते।	चील्ह [चील]लड़के के हाथ से रोटी छीन कर उड़ जाती है।

तिर्यग्जन्तुप्रकरणम्

१ सर्पाः शीघ्रं सर्प्पन्ति।	सर्प शीघ्र चलते हैं।
२ अयं कृष्णः फणी महाविषधारी।	यह काला सांप बड़ा विषवाला है।
३ भवता कदाचिदजगरोऽपि दृष्टो न वा?	आपने कभी अजगर भी देखा है वा नहीं
४ पश्याहिनकुलः संग्रामो वर्त्तते।	देख, सांप और नेउले का युद्ध होता है
५ स वृश्चिकेन दष्टो रोदिति।	वह बिच्छू से काटा रोता है।
६ इयं गोधा स्थूलास्ति।	यह गोह मोटी है।
७ मूषका बिले शेरते।	मूसे बिल में सोते हैं।
८ मक्षिकां भक्षित्वा वमनं प्रजायते।	मक्खी खाकर वमन हो जाता है।
९ अत्र वासोभिधेयोयन्निर्मक्षिकं वर्त्तते।	यहां वास करना चाहिये, जिससे मक्खी एक भी नहीं है।
१० मधुमक्षिकादंशेन शोथः प्रजायते।	मधुमक्खियों के काटने से सूज जाता है
११ भ्रमरा रुत्वाः पुष्पेभ्यो गन्धं गृह्णन्ति।	भौंरे गूंजते हुए, फूलों से सुगन्धि ग्रहण करते हैं।

जलजन्तुप्रकरणम्

१ तिमिङ्गिला मत्स्याः समुद्रे भवन्ति।	तिमिङ्गिल मछलियाँ समुद्र में होती हैं।
२ रोहूखड्ग सिंहतुंड राजीव लोचनाश्च कुण्ड पुष्करिणीनदीतडागसमुद्रेषु निवसन्ति।	रोहू, खड्ग सिंह तुंड और राजीव लोचन इन नामों की मछलियाँ कुण्ड, बावली, नदी,तालाब और समुद्र में वास करती हैं
३ ग्राहः पशूनपि गृहीत्वा निगलति।	मगर पशुओं को भी पकड़ कर लील जाता है।
४ नक्रा अपि महान्तो भवन्ति।	घरियार भी बड़े होते हैं।
५ कूर्माः स्वाङ्गानिसंकोच्य प्रसारयन्ति।	कछुए अपने अङ्गों को समेट कर फैलाते हैं
६ वर्षासु मण्डूकाः शब्दयन्ति।	वर्षा काल में मेंढक शब्द करते हैं।
७ जलमनुष्या अप्सु निमज्य तट आसते।	जल के मनुष्य पानी में डूबकर तीर पर बैठते हैं।

वृक्षवनस्पतिप्रकरणम्

१ पिप्पला: फलिता न वा?	पीपल फले हैं वा नहीं?
२ इमे वटा: सुच्छायास्सन्ति।	ये बड़ अच्छी छायावाले हैं।
३ पश्येम उदुम्बरा: सफला वर्त्तन्ते।	देख, ये गूलर फलयुक्त हो रहे हैं।
४ इमे विल्वा: स्थूलफलास्सन्ति।	ये बेल बड़े फलवाले हैं।
५ ममोद्यान आम्रा: पुष्पिता:फलिता: सन्ति। इदानीं पक्वफला अपि वर्त्तन्ते।	मेरे बगीचे में आम फूले–फले हैं। इस काल में पके फलवाले भी हैं।
६ अस्याऽऽम्रस्य मधुराणि रसवन्ति च फलानि भवन्ति।	इस आम के मीठे और रसवाले फल होते हैं।
७ तस्य त्वम्लानि भवन्ति।	उसके तो खट्टे होते हैं।
८ पनसस्य महान्ति फलानि भवन्ति।	कटहल के बड़े फल होते हैं।
९ शिंशपाया[३२]: काष्ठानि दृढानि सन्ति शालस्य दीर्घाणि च।	सीसों की लकड़ी दृढ होती और सखुबे की लम्बी होती है।
१० अस्य किङ्किरो: कण्टकास्तीक्ष्णा भवन्ति	इस किङ्किर के कांटे तीखे होते हैं।
११ बदरीणां तु मधुराम्लानि फलानि	बेरियों के फल तो मीठे खट्टे और इनके
१२ कण्टकाश्च कुटिला भवन्ति।	कांटे टेढ़े होते हैं।
१३ कटुको निम्बो ज्वरं निहन्ति।	कडुआ नीम ज्वर का नाश कर देता है
१४ निम्बूफलरसं सूपे निक्षिप्य भोक्तव्यम्	नींबू का रस दाल में डालकर खाने योग्य है।
१५ मम वाटिकायां दाडिमफलान्युत्तमानि जायन्ते।	मेरे बगीचे में अनार बहुत अच्छे होते हैं।
१६ नवरङ्गफलान्यानय	नारंगी के फलों को ला।
१७ वसन्ते पलाशा: पुष्प्पीयन्ते।	वसन्त ऋतु में ढाक फूलते हैं।
१८ उष्ट्रा शमीवृक्षपत्रफलानि भुञ्जते।	ऊंट शमी अर्थात् खींजड़े (छोंकर) वृक्ष के पत्ते और फलों को खाते हैं।

औषधप्रकरणम्

१ कदलीफलानि पक्वानि न वा?	केले के फल पके वा नहीं?
२ तण्डुलादयस्तु वैश्यप्रकरणे लिखिता	चावल इत्यादिक तो वैश्य के प्रकरण

स्तत्र दृष्टव्याः।	में लिखे हैं वहां देख लेना।
३ विषनिवारणायाऽपामार्गमानय।	विष निवारण के लिये चिचिड़ा लाओ।
४ निर्गुण्डयाः पत्राण्यानेयानि।	निर्गुण्डी के पत्ते लाने चाहिये।
५ लज्जावत्याः किं जायते।	लज्जावन्ती का क्या होता है?
६ गुडुचि ज्वरं निवारयति।	गुडुच ज्वर को शान्त कर देती है।
७ शंखावलीं दुग्धेपक्त्वा पिबेत्।	शंखावली को दूध में पका के पिये।
८ यथर्त्तुयोगं हरीतकी सेविता सर्वान् रोगान्निवारयति।	जिस प्रकार से ऋतु ऋतु में हरड़े का सेवन करना योग्य है वैसे सेवी हुई [हरड़] सब रोगों को छुड़ा देती है।
९ शुण्ठीमरीचपिप्पलीभिः कफवातरोगा निहन्तव्याः।	सोंठ, मिर्च और पीपल से कफ और वात रोगों का नाश करना चाहिये।
१० योऽश्वगन्धां दुग्धे पाचयित्वा पीता पुष्टिं जनयति।	जो असगन्ध दूध में पका के पीये तो वह पुष्टि करता है।
११ इमानि कन्दानि भोक्तुमर्हाणि वर्त्तन्ते	ये कन्द खाने के योग्य हैं।
१२ एतेषां तु शाकमपि श्रेष्ठं जायते।	इन कन्दों का तो शाक भी अच्छा होता है।
१३ अस्यां वाटिकायां गुल्मगुच्छलताः प्रशंसनीयाः सन्ति।	इस बगीचे में गुच्छा गुलाब और बेलें प्रशंसा के योग्य अर्थात् अच्छी हैं।

आत्मीयप्रकरणम्

१ तव ज्येष्ठो बन्धुर्भगिनी च काऽस्ति?	तेरा बड़ा भाई और बहिन कौन हैं?
२ देवदत्तस्सुशीला च।	देवदत्त और सुशीला।
३ भो बन्धो! अहं पाठाय व्रजामि।	हे भाई! मैं पढ़ने को जाता हूँ।
४ अत्युत्तमा वार्त्ता प्रिय याहि समभ्यस्य पूर्णा विद्याः पठित्वैवागन्तव्यम्।	हे प्रिय भाई तूने बहुत उत्तम बात विचारी जा अच्छे प्रकार अभ्यास से पूर्ण विद्या पढ़ ही के आना।
५ भवतः कन्या अद्यश्वः किं पठन्ति?	आपकी बेटियाँ आजकल क्या पढ़ती हैं
६ वर्णोच्चारणशिक्षादिकं पठित्वा दर्शन-शास्त्राण्यधीत्य धर्मपाकशिल्प गणितविद्या अधीयते।	वर्णोच्चारण शिक्षादि और दर्शन शास्त्र पढ़कर धर्म, पाक, शिल्प और गणितविद्या पढ़ती हैं।

७ भवज्ज्येष्ठया भगिन्या किं किम–धीत्येदानीं किं क्रियते?	आपकी बड़ी बहिन क्या–क्या पढ़कर अब क्या करती है?
८ वर्णज्ञानमारभ्य वेदपर्यन्ताः सर्वा विद्या विदित्वेदानीं बालिकाः पाठयति।	अक्षराभ्यास से लेके वेदतक सब पूरी विद्या पढ़ के अब कन्याओं को पढ़ाया करती है।
९ तया विवाहः कृतो न वा?	उसने विवाह किया वा नहीं?
१० इदानीं तु न कृतः परन्तु वरं परीक्ष्य स्वयंवरं कर्तुमिच्छति।	अभी तक तो नहीं किया, परन्तु वर की परीक्षा करके स्वयंवर करने की इच्छा करती है।
११ यदा कश्चित् स्वतुल्यः पुरुषो मिलिष्यति तदा विवाहं करिष्यति।	जब कोई अपने सदृश पुरुष मिलेगा तब विवाह करेगी।
१२ तव मित्रैरधीतं न वा?	तेरे मित्रों ने पढ़ा है वा नहीं?
१३ सर्व एव विद्वांसो वर्त्तन्ते कुतो यथाऽहं तथैव तेऽपि, समानस्वभावेषु मैत्र्यास्सम्भवात्।[33]	सब ही विद्वान् हैं,जैसा मैं हूँ वैसे वे भी हैं, क्योंकि तुल्य स्वभाववालों में मित्रता का सम्भव है।
१४ इमे मम मित्रस्य स्त्रीभगिनीदुहितृ–जामातारः सन्ति।	ये मेरे मित्र की स्त्री, बहिन, लड़की और जमाई हैं।
१५ तव पितृव्यः किं करोति?	तेरा चाचा क्या करता है?
१६ राज्यव्यवस्थाम्।	राज्य का कारवार।
१७ अयं तव मातुलोऽस्ति किं?	यह तेरे मामा हैं क्या?
१८ अयं [मम] मातुल इयं पितृष्वसेयं मातृष्वसेयं गुरुपत्न्ययं च गुरुः।	यह मेरा मामा, यह बाप की बहिन बूआ, यह माता की बहिन मौसी, यह गुरु की स्त्री और यह गुरु है।
१९ इदानीमेते कस्मै प्रयोजनायैकत्र मिलिताः	इस समय ये सब किसलिये मिलकर इकट्ठे हुए हैं?
२० मया सत्कारायाऽऽहूताः सन्त आगतः।	मैने सत्कार पूर्वक बुलाये है,सो ये सब आये हैं।
२१ इमे मम पितृश्वश्रूश्वसुरश्यालादयः	ये मेरे पिता की सास ससुर और साले

सन्ति।	आदि हैं।
२२ इमौ मम पितृव्यस्यश्यालदौहित्रौ स्तः।	ये मेरे चाचा का साला और दुहिता है।

सामन्तप्रकरणम्

१ त्वद्गृहनिकटे के वसन्ति?	तेरे घर के पास कौन रहते हैं?
२ ब्राह्मणक्षत्रियविट्शूद्राः।	ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
३ इमे राजसनीडनिवासिनः।	ये राजा के पास रहनेवाले हैं।

कारुप्रकरणम्

१ भोस्तक्षन![३४] त्वया नौविमानस्थशकट–	हे बढ़ई! तू नावें, विमान, रथ, गाड़ी
हलादीनि निर्माय तत्र प्रशस्तानि कला–	और हल आदि रचके उनमें अत्युत्तम
यन्त्र कौशलानि रचनीयानी।	कला और यन्त्र आदि बना।
२ इदं काष्ठं छित्वा पर्य्यङ्कं रचय।	इस लकड़ी को काट के पलंग बना।
३ अस्मात्कपाटाः सम्पादनीयाः।	इससे किवाड़ों को बना।
४ इमं वृक्षं किमर्थं छिनत्सि?	इस वृक्ष को किसलिये काटता हैं?
५ मुसलोलूखनिर्माणाय।	मूसर [मूसल] और ऊखरी बनाने के लिये।

अयस्कारप्रकरणम्

१ भो अयस्कार! त्वयाऽस्मादयसः	हे लोहकार! तुझको इस लोहे के बाण,
बाणासिशक्तितोमरमुग्दरशताघ्नीभुश–	तलवार, बरछी, तोमर, मुग्दर, बंदूक
ण्डयो निर्मातव्याः।	और तोप बना देने चाहिये।
२ एतस्मात् क्षुरादीनि।	इससे छुरे आदि।
३ इमौ कलशकटाहौ विक्रीयेते न वा?	यह घड़ा और कड़ाही को बेचता है वा नहीं?
४ विक्रीणामि।	बेचता हूँ।
५ एतान्कीलकण्टकान्किमर्थान्रचयसि	इन कील–कांटों को किसलिये बनाता है
६ विक्रयणाय।	बेचने के लिये।

सुवर्णकारप्रकरणम्

१ त्वया सुवर्णादिकं नैव चोर्यम्।	तू सोना आदि मत चुराना।
२ आभूषणान्युत्तमानि निर्माहि![३५]	गहने अच्छे सुन्दर बना।
३ अस्य हारस्य कियन्मूल्यमस्ति?	इस हार का कितना मोल है?

४ पञ्च सहस्राणि राजत्यो मुद्राः	पांच हजार रुपये।
५ इमौ कुण्डलौ त्वया श्रेष्ठौ रचितौ वलयौ तु न प्रशस्तौ।	ये दोनों कुण्डल तूने अच्छे बनाये परन्तु कड़े तो बिगाड़ दिये।
६ एतान्यङ्गुलीयकानि मुक्ताप्रवाल हीरकनीलमणिजटितानि सम्पादय।	ये अंगूठियाँ मोती, मूंगा, हीरा और नीलमणि से जड़ी हुई बना।
७ एतेनालङ्कारा अत्युत्तमा रच्यन्ते।	यह गहने बहुत अच्छे बनाता है। [इससे गहने बहुत अच्छे बनाये जाते हैं]
८ नासिकाभूषणं सद्यो निष्पादय।	नथिआ [नथुनी] अभी बना दे।
९ इदं मुकुटं केन रचितम्?	यह मुकुट किसने बनाया?
१० शिवप्रतापेन।	शिवप्रताप ने।
११ अस्य सुवर्णस्य कटककङ्कण नूपुरान् निर्माय सद्यो देहि।	इस सोने के कड़ा, कंकनी वा कंगना और पजेब बनाके अभी दे।

कुलालप्रकरणम्

१ भो कुलाल! कुम्भशरावमृद्गवकान् निर्माहि।	अरे कुम्हार! घड़ा, सकोरा और मिट्टी की गौओं को बना।
२ घटं देह्यनेन जलमानेष्यामि।	घड़ा दे इससे जल लाऊँगा।

तन्तुवायप्रकरणम्

१ भो तन्तुवाय! अस्य सूत्रस्य पटशाट्युष्णीषाणि वय।	ओ जुलाहे! इस सूत का पटका, साड़ी और पगड़ियाँ बुन।

सूचीकारप्रकरणम्

१ भो! सूच्या किं सीव्यसि?	ओ! सूई से क्या सीता है?
२ शिरोङ्गरक्षणाधोवस्त्राणि सीव्यामि।	टोपी, अंगरखा और पाजामा सीता हूँ।

मिश्रितप्रकरणम् [३]

१ भो कारुक! कटं वय	अरे चटाईवाले! चटाई बुन।
२ इमे व्याधाः मृगादीन्पशून् हन्ति।	ये बहेलिये हरिन आदि पशुओं को मारते हैं
३ किराता वने निवसन्ति।	किरात अर्थात् भील लोग वन में रहते हैं
४ सकमलानि सरांसि कुत्र सन्ति?	कमलवाले तालाब कहां हैं?
५ इमे तडागाः ग्रीष्मे शुष्यन्ति।	ये सब तालाब गरमी में सूख जाते हैं।

६ कूपाज्जलमानय।	कुंए से जल ला।
७ अद्य वाप्यां स्नातव्यम्।	आज बावड़ी में नहाना चाहिये।
८ रज्जकेन शतघ्नी भुशुण्डयादयश्चलन्ति	बारूद से बंदूक और तोपें आदि चलती हैं
९ अयं कम्बलस्त्वया कस्माद् गृहीतः कस्मै प्रयोजनाय?	यह कम्बल तूने किससे लिया किस प्रयोजन के लिये?
१० कश्मीराच्छीतनिवारणाय।	कश्मीर से, जाड़ा छुड़ाने के लिये।
११ पश्य माण्वकाः क्रीडन्ति।	देख, लड़के खेलते हैं।
१२ अस्मिन् गृहे स्रस्तराणि[३६] श्रेष्ठानि सन्ति	इस घर में बिछौने अच्छे हैं।
१३ इमे चोराः पलायन्ते।	ये चोर लोग भागे जाते हैं।
१४ तत्र दस्युभिरागत्य सर्वं धनं ह्रतम्।	वहां डाकू लोगों ने आकर सब धन हर लिया।
१५ द्वापरान्ते युधिष्ठिरादया बभूवुः।	द्वापर के अन्त में युधिष्ठिरादि हुए थे।
१६ मम पादे कण्टकः प्रविष्ट एनमुद्धर।	मेरे पैर में कांटा घुस गया, इसको निकाल।
१७ केशान् संवेसय।	बालों को संभाल।
१८ भो नापित! नखाञ्छिन्धि मुण्डय शिरः श्मश्रूणि च।	ओ नाऊ! नखों को काट, शिर मूंड और मूछ भी काट डाल।
१९ अयं शिल्पी प्रासादमत्युत्तमं रचयति।	यह राज अटारी बहुत अच्छी बनाता है
२० अयं कोटपालो न्यायकारी वर्त्तते।	यह कोतवाल न्यायकारी है।
२१ स तु धर्मात्मा नैवास्त्यन्याय–कारित्वात्।	वह कोतवाल तो धर्मात्मा नहीं है, अन्यायकारी होने से।
२२ एते राजमन्त्रिणः कुत्र गच्छन्ति?	ये राजा के मन्त्री लोग कहां जाते हैं?
२३ राजसभां न्यायकरणाय यान्ति।	राजसभा को न्याय करने के लिये।
२४ भोस्ताम्बूलानि देहि।	ओ! पान दे।
२५ ददामि।[३७]	देता हूँ।
२६ भोस्तैलकार! तिलेभ्यस्तैलंनिस्सार्य देहि।	ओ तेली! तिलों से तैल निकाल कर दे
२७ दास्यामि।[३८]	दूंगा।
२८ भो रजक! वस्त्राणि प्रक्षाल्य सद्यो देयानि	अरे धोबी! कपड़ों को धोकर अभी दे।
२९ कपाटान् बधान।[३९]	किवाड़ों को बन्द कर।

३० इदानीं प्रातःकालो जातः कपाटानुद्घाट्य	इस समय सवेरा हुआ किवाड़े खोल।
३१ सर्वे युद्धाय सज्जा भवन्तु।	सब सिपाही लोग लड़ाई के लिये तैयारहों।
३२ अर्थिप्रत्यर्थिनौ राजगृहे युध्येते।[४०]	मुद्दई और मुद्दायले कचहरी में लड़ते हैं
३३ किमियं गोधूमान् पिनष्टि?	क्या यह गेहुओं को पीसती है?
३४ कुतोऽद्य दुर्गे शतघ्न्यश्चलन्ति?	क्यों आज किले में तोपें छूटती हैं?
३५ तेन भुशुण्ड्या सिंहो हतः।	उसने बन्दूक से बाघ को मारा।
३६ तेनाऽसिना तस्य शिरश्छेदितम्।	उसने तलवार से उसका शिर काट डाला।
३७ अञ्जनं किमर्थमनक्षि?	अञ्जन किसलिये लगाता है?
३८ दृष्टि वृद्धये।	दृष्टि बढ़ाने के लिये।
३९ उपानहौ धृत्वा क्व गच्छसि?	जूते पहिन कर कहां जाता है?
४० जङ्गलम्।	जङ्गल को।
४१ किं स्थाल्यामोदनं पचसि सूपं वा?	क्या बटुवे में भात पकाता है, वा दाल?
४२ कटाहे शाकं पच।	कड़ाही में तरकारी पका।
४३ विरुद्धं वदिष्यसि चेत्तर्हि दन्तांस्त्रोटयिष्यामि।	विरुद्ध बोलेगा तो तेरे दाँत तोड़ डालूंगा
४४ तव पितुस्तु सामर्थ्यं नाभूत् तव तु का कथा।	तेरे बाप का तो सामर्थ्य न हुआ, अब तेरी तो क्या बात है।
४५ येन प्रजा पाल्यते स कथन्न स्वर्गं गच्छेत्	जिसने प्रजा का पालन किया, वह स्वर्ग को क्यों न जाय?
४६ यो राज्यं पीडयेत्स कुतो न नरके मज्जेत्?	जो राज्य को दुःख देवे, वह नरक को क्यों न जाय?
४७ येनेश्वर उपासेत तस्य विज्ञानं वर्द्धेत?	जो ईश्वर की उपासना करे, उसका विज्ञान बढ़े।
४८ यः परोपकारी स सततं सुखी।	जो परोपकारी है वह सर्वदा सुखी है।
४९ अस्यां मञ्जूषायां किमस्ति?	इस संदूक में क्या है?
५० वस्त्रधने।	कपड़ा और धन।
५१ इदानीमपि कुम्भ्यां धान्यं वर्त्तते न वा	अब भी कोठी में अन्न है वा नहीं?

५२ स्वल्पमस्ति।	थोड़ा सा है।
५३ त्वमालसी तिष्ठसि कुतो नोद्योगं करोषि	तू आलसी रहता है, उद्योग क्यों नहीं करता?
५४ उभयत्र प्रकाशाय देहल्यां दीपं निधेहि	दोनों ओर उजियाला होने के लिये दरवाजे पर दिया धर।
५५ तेनचर्मासिभ्याम् शतेन सह युद्धं कृतम्।	उसने ढाल और तलवार से सौ पुरुषों के साथ युद्ध किया।
५६ अतिथीन् सेवयसि न वा?	अतिथि की सेवा करता है वा नहीं?
५७ प्रेक्षासमाजं मा गच्छ।	कभी मेले–तमाशे में मत जा।
५८ द्यूतस्समाह्वयौ नैव सेवनीयौ।	द्यूत–जड़ पदार्थों और समाह्वय–चेतन पदार्थों को दाव में धर के खेलना कभी न करना चाहिये।
५९ यो मद्यपोऽस्ति तस्य बुद्धि र्नश्यति।	जो शराब पीनेवाला है, उसकी बुद्धि नष्ट होगी [होती है]।
६० यो व्यभिचरति स रुग्णो जायते।	जो व्यभिचार करता है वह रोगी होता है
६१ यो जितेन्द्रियस्स सर्वं कर्तुं शक्नोति।	जो जितेन्द्रिय है वह सब कर सकता है
६२ योगाभ्यासः कृतो येन ज्ञानदीप्तिर्भवेन्नरः।	जिसने योग का अभ्यास किया है वह ज्ञान प्रकाश युक्त होता है।
६३ वस्त्रपूतं जलं पेयं मनः पूतं समाचरेत्।	कपड़े से छान कर जल पीना चाहिये और मन जिसमें प्रसन्न हो उसी कर्म को करना चाहिये।
६४ [४१]स भ्रान्तौ कदापि न पतेत्?	वह भ्रमजाल में कभी नहीं गिरे।
६५ अयं वाचालोऽस्त्यतो बरबरायते।	यह बकने वाला है इस कारण से बड़बड़ाता है।
६६ भूमितले किमस्ति?	भूमि के नीचे क्या है?
६७ मनुष्यादयः।	मनुष्यादि।
६८ यः पद्भ्यां भ्रमति तस्यारोग्यं जायते।	जो पग से चलता है उसको आरोग्य रहता है।
६९ व्यजनेन वायुं कुरु।	पङ्खे से हवा कर।

७० किं घर्मादागतोऽसि यत् स्वेदो जातोऽस्ति[४२]	क्या घाम से आया है जो पसीना हो रहा है?
७१ स्वस्थे शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्तव्यम्।	अच्छे शरीर में रोज नहा के थोड़ा खाना चाहिये कि जितना पच जाये।
७२ जलवायू शुद्धौ सेवनीयौ।	पवित्र जल और वायु का सेवन करना चाहिये।
७३ सर्वर्तुके शुद्धे गृहे निवसनीयम्।	जो सब ऋतुओं में सुख देनेवाला घर हो उसी में रहना चाहिये।
७४ नैव केनचिन्मलिनानि वस्त्राणि धार्याणि।	किसी को भी मैले कपड़े पहिनने न चाहियें।
७५ तव[४३] का चिकीर्षास्ति?	तेरी क्या इच्छा है?
७६ गृहं गत्वा भोक्तुम्।	घर पर जाके खाने की।
७७ त्वं सक्तुं भुङ्क्षे न वा?	तू सत्तु खाता है वा नहीं?
७८ घृतदुग्धमिष्टैः सहाऽद्मि।[४४]	घी, दूध और मीठे के साथ खाता हूँ।
७९ त्वयाम्रफलानि चूषितानि न वा?	तूने आम के फलों को चूसा वा नहीं?
८० उर्वारुकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते।	खरबूजे के फल यहां मीठे होते हैं।
८१ इक्षुभ्यो गुडादिकं निष्पद्यते।	ऊख आदि से गुड़ इत्यादि बनते हैं।
८२ इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया।	इस समय गले तक मैंने दूध पिया।
८३ तक्रं देहि।	मठा दे।
८४ दुग्धंपिव।	दूध पी।
८५ अत्र श्वेता शर्करा वर्तते।	यहां सफेद चीनी है।
८६ अयं दध्योदनं भुङ्क्ते।	यह दही भात खाता है।
८७ अद्य मोदका भुक्ता न वा?	आज लड्डू खाये वा नहीं?
८८ त्वया कदाचित्कृशरा भुक्ता न वा?	तूने कभी खिचड़ी खाई है वा नहीं?
८९ मयाऽपूपा भक्षिताः।	मैंने मालपूये खाये हैं।
९० सशर्करं दुग्धं पेयम्।	शक्कर के सहित दूध पीना चाहिये।
९१ येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते।	जो धर्म्म का सेवन करता है वही सुखी होता है।

लेख्यलेखकप्रकरणम्

१ मनुष्यो लेखाभ्यासं सम्यक् कुर्यात्।	मनुष्य लिखने का अभ्यास अच्छे प्रकार करे।
२ अयमनुत्तममक्षरविन्यासं करोति।	यह अत्युत्तम अक्षर लिखता है।
३ लेखनीं सम्पादय।	कलम बना।
४ मसीपात्रमानय।	दवात ला।
५ पुस्तकं लिख।	पोथी लिख।
६ तत्र पत्रं लिखित्वा प्रेषितं न वा?	वहां चिट्ठी लिखकर भेजी वा नहीं?
७ प्रेषितं पञ्च दिनानि व्यतीतानि तस्य प्रत्युत्तरमप्यागतम्।	भेजी, पांच दिन बीते, उसका जवाब भी आ गया।
८ सुवर्णाक्षराणि लिखितुं जानासि न वा	सुनहरी अक्षर लिखने जानता है वा नहीं?
९ जानामि तु परन्तु सामग्रीसञ्चयने[४५] लेखने च विलम्बो भवति।	जानता तो हूँ परन्तु चीज इकट्ठी करने और लिखने में देर होती है।
१० यद्यंगुष्ठतर्जनीभ्यां लेखनीं गृहीत्वा मध्यमोपरि संस्थाप्य लिखेत्तर्हि प्रशस्तो लेखो जायेत।	जो अंगूठा तर्जनी अंगुली से कलम को पकड़कर बीचली अंगुली पर रख कर लिखे तो बहुत अच्छा लेख होवे।
११ अयमतीव शीघ्रं लिखति।	यह अत्यन्त जल्दी लिखता है।
१२ एतस्य लेखनी मन्दा चलति।	इसकी कलम धीरे चलती है।
१३ यदि त्वमेकाहनि सततं लिखेस्तर्हि कियतः श्लोकान् लिखितुं शक्नुयाः?	यदि तू एक दिन निरन्तर लिखे तो कितने श्लोक लिख सके?
१४ पञ्चशतानि।	पांच सौ।
१५ यदि शिक्षां गृहीत्वा शनैः शनैर्लिखितुमभ्यस्येत्तर्ह्यक्षराणां सुन्दरं स्वरूपं स्पष्टता च जायते।	यदि शिक्षा ग्रहण कर के धीरे–धीरे लिखने का अभ्यास करे तो अक्षरों का दिव्यस्वरूप और साफ होवे।
१६ अस्मिंल्लाक्षारसे कज्जलं सम्मिलितं न वा?	इस लाख के रस में कज्जल मिला है वा नहीं?
१७ मिलितं तु न्यूनं खलु वर्त्तते।	मिला तो है परन्तु थोड़ा है।

१८ मनुष्यैर्यादृश पठनाभ्यास कुर्यात् तादृशमेव लेखनाभ्यासमपि।	मनुष्य लोग जैसा पढ़ने का अभ्यास करें वैसा ही लिखने का भी अभ्यास करना चाहिये।
१९ मया वेदपुस्तकं लेखयितव्यमस्त्येकेन रुप्येण कियतः श्लोकान् दास्यसि?	मुझको वेद का पुस्तक लिखाना है, एक रुपये से कितने श्लोक देगा?
२० अत्युत्तमानि ग्रहीष्यसि चेत्तर्हि शतत्रयं मध्यानि चेच्छतपञ्चकम् साधारणानि चेत्सहस्रं श्लोकान् दास्यामि।	जो बहुत अच्छे लोगे तो तीन सौ और मध्यम लोगे तो पांच सौ। यदि बहुत साधारण वा घटिया लोगे तो हजार श्लोक दूंगा।
२१ शतत्रयमेव ग्रहीष्यामि परन्त्वत्युत्तमं लिखित्वा दास्यसि चेत्।	तीनसौ ही लूंगा परन्तु बहुत अच्छा लिख कर देगा तो।
२२ वरमेवमेव करिष्यामि।	अच्छा, ऐसा ही करूंगा।

मन्तव्यामन्तव्यप्रकरणम्

१ त्वं जगत्स्रष्टारं सच्चिदानन्दस्वरूपं परमेश्वरं मन्यसे न वा?	तू इस संसार के बनानेवाले सत्, चित् और आनन्दस्वरूप परमेश्वर को मानता है वा नहीं?
२ अयं नास्तिकत्वात् स्वभावात् सृष्ट्युत्पत्तिं मत्वेश्वरं न स्वीकरोति।	यह मनुष्य नास्तिक होने से स्वभाव से सृष्टि की उत्पत्ति को मानकर ईश्वर को नहीं मानता।
३ यद्ययं कर्तृकार्यरचकरचनाविशेषान् संसारे निश्चिनुयात्तर्ह्यवश्यं परमात्मानं मन्येत।	जो यह नास्तिक कर्त्ता क्रिया बनानेहारा और बनावट को इस जगत् में निश्चय करे तो अवश्य ईश्वर को माने।
४ योऽत्र सृष्टौ रचितरचनां पश्यति स जीवः कार्य्यवत्स्रष्टारं कुतो न मन्येत?	जो इस सृष्टि में बने हुए पदार्थों की बनावट को प्रत्यक्ष देखता है वह जैसा कारीगरी को देख के कारीगर का निश्चय करते हैं वैसे जगत् के बनानेवाले परमात्मा को क्यों न माने?
५ यत्रोत्तमा धार्मिका आस्तिका	जहां श्रेष्ठ, धर्मात्मा, आस्तिक, विद्वान्

विद्वांसोऽध्यापका उपदेष्टारश्च स्युस्तत्र कोऽपि कदाचिन्नास्तिको भवितुं नैवार्हेत	लोग पढ़ानेवाले और उपदेशक हों, वहां कोई भी मनुष्य नास्तिक कभी नहीं हो सकता।
६ कैः कर्मभिर्मुक्तिर्भवति तदा क्व वसन्ति तत्र किं भुज्यते च?	किन कर्मों से मुक्ति होती है, उस समय कहां वास करते और वहां क्या भोगते हैं
७ धर्म्यैः कर्मोपासनाविज्ञानैर्मुक्ति र्जायते, तदानीं ब्रह्मणि निवसन्ति परमानन्दं च सेवन्ते।	धर्मयुक्त कर्म, उपासना और विज्ञान से मोक्ष होता है, उस समय ब्रह्म में मुक्त जीव रहते और परम आनन्द का सेवन करते हैं।
८ मोक्षं प्राप्य तत्र सदा वसन्त्या होस्वित् कदाचित्ततो निवृत्य पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्ति?	जीव मुक्ति को प्राप्त होके वहाँ सदा रहते हैं अथवा कभी वहां से निवृत्त होकर पुनः जन्म और मरण को प्राप्त होते हैं?
९ प्राप्तमोक्षा जीवास्तत्र सर्वदा न वसन्ति, किन्तु महाकल्पपर्यन्तमर्थाद् ब्राह्ममायु-र्यावत्तावत्तत्रोषित्वाऽऽनन्दं भुक्त्वा पुनर्जन्ममरणे प्राप्नुवन्त्येव।	मुक्ति को प्राप्त हुए जीव वहां सर्वदा नहीं रहते, किन्तु जितना ब्रह्म कल्प का परिमाण है उतने समय तक ब्रह्म में वास कर आनन्द भोग के फिर जन्म और मरण को अवश्य प्राप्त होते हैं।

इति श्रीमद्दयानन्दसरस्वतीस्वामिना निर्मितः संस्कृतवाक्यप्रबोधनामको निबन्धः समाप्तः॥

परिशिष्ट–१

[संस्कृतवाक्यप्रबोध के सम्बन्ध में श्री पं. अम्बिकादत्त ने आक्षेप किया था, जिसका उत्तर किसी पण्डित ने दिया जो ऋषि दयानन्द के पत्र व विज्ञापन में निम्न प्रकार प्रकाशित है–]

१– येन शरीराच्छ्मो न क्रियते स नैव शरीरसुखमवाप्नोति। पृ० ७।पं० १॥

यहां पण्डित अम्बिकादत्तजी लिखते हैं कि (शरीरात्) इस पद में पञ्चमी विभक्ति अशुद्ध है किन्तु (शरीरेण) ऐसा चाहिये। सो यह सन्देह कारक–

व्यवस्था को ठीक–ठीक नहीं विचारने से हुआ है। देखो श्रम कहते हैं पुरुषार्थ करने को। उसका कर्त्ता जीवात्मा और शरीर आश्रय रहता है। क्योंकि चेष्टेन्द्रियार्थाश्रयः शरीरम्। चेष्टा अर्थात् क्रिया का जो आश्रय है उसको शरीर कहते हैं। सो यहां पञ्चमी विधाने ल्यब्लोपे कर्मण्युपसंख्यानम्। अ० २। ३। २८॥ इस वार्तिक से (आश्रित्य) इस ल्यबन्त क्रिया के लोप में पञ्मी विभक्ति हुई है। देखो, ऐसा वाक्यार्थ होगा। येन पुरुषेण शरीरमाश्रित्य श्रमो न क्रियते– इत्यादि। जो कहो कि ऐसा अर्थ भाषा में क्यों न किया तो संस्कृत के एक वाक्य का व्याख्यान भाषा में कई प्रकार से कर सकते हैं इसमें कुछ विवाद नहीं है। परन्तु यहां तो प्रयोजन यही है कि भाषा सुगम और थोड़ी हो ऐसा उल्था करना चाहिये। अब पण्डितजी के कहने से तो प्रासादात्प्रेक्षते इत्यादि महाभाष्यकार के प्रयोगों में भी पञ्चमी विभक्ति नहीं होनी चाहिये। और भी पण्डितजी क्या लिखते हैं कि विभाषा गुणेऽस्त्रियाम्। अ० २। ३। २५॥ भला इसका यहाँ क्या प्रसंग था? सो जब स्वामीजी के मुख्य अभिप्राय को पण्डितजी न समझे तो जो सूत्र सामने आया लिख बैठे। भला शरीर शब्द को कोई थोड़ी विद्यावाला भी गुणवाचक कह सकता है कि जिससे गुणवाची मान के पञ्चमी विभक्ति हो जावे। और कारक विषय में ऐसा भी नियम है कि– कारकं चेद्विजानीयाद्यां यां मन्येत सा भवेत्। महाभाष्य १। ४। ५१॥ अर्थात् यह शब्द क्रिया के किस अंश को सिद्ध करता है ऐसे क्रियासाधक कारक को जान के जिस–जिस विभक्ति से वह अर्थ प्रतीत हो सके वह विभक्ति हो जाती है। इन गूढ़ बातों को समझना सबका काम नहीं है॥ १॥

२–चक्रवर्तिशब्दस्य कः पदार्थः? **पृ० ११ पं० ५॥**

यहां पण्डितजी लिखते हैं कि चक्रवर्ति शब्द का क्या अर्थ है इसकी संस्कृत यही होगी। इनको भाषा का भी बोध है जैसा विदित हो गया। भला संस्कृत शब्द को स्त्रीलिंग पण्डितजी ने किस व्याकरण से किया। यह संस्कृत प्राचीन ऋषि–मुनियों के अनुकूल है, इसमें कुछ दोष नहीं। देखो, महाभाष्य में लिखा है कि अथ शब्दसिद्धस्य कः पदार्थः? अ० १। पाद ११। आह्निक १॥ इसका क्या यह अर्थ नहीं है कि सिद्ध शब्द का क्या अर्थ है? बड़े

आश्चर्य की बात है कि प्राचीन ग्रन्थों को बिना देखे दोष देने लगते हैं। अब पण्डितजी का लगाया दोष कुछ स्वामीजी को ही लगा हो सो नहीं किन्तु इन्होंने तो सब ऋषि–मुनियों को दोष लगा दिया और सापेक्षम समर्थं भवतीति। महाभाष्य २/१/१॥ यह दोष यहाँ कभी नहीं आता क्योंकि यहां एक देश के साथ अन्वय नहीं है। और इसी प्रकार सभा शब्दस्य कः पदार्थः? इसको शुद्ध समझ लेना॥ २॥

३–अस्मिन् समये तु मम सामर्थ्यं नास्ति षण्मासानन्तरं दास्यामि।

(महा० २।१।१) पृ० १९।२४॥

यहां 'षण्मास' शब्द में पण्डितजी को सन्देह हुआ है कि यहाँ द्विगोः। अष्टा० ४।१।२१॥ इस सूत्र से ङीप् होके षण्मासी शुद्ध होता है। इस भ्रम का मूल यही है कि उनको व्याकरण के सब सूत्र विदित नहीं हैं। पण्डितजी के कथनानुसार यदि स्वामीजी का लेख अशुद्ध भी माना जावे तो फिर पाणिनि मुनि का सूत्र भी अशुद्ध मानना चाहिये। सू० षण्मासाण्यच्च। अ० ५।१।८३॥ यहां पण्डितजी के मतानुसार षण्मास्या ण्यच्च इस प्रकार का सूत्र होना चाहिये। अब देखिये पाणिनीय सूत्र को यदि पण्डितजी जानते होते तो स्वामीजी के लेख को मिथ्या दोष क्यों लगाते और छोटे–छोटे बालक कि जो अष्टाध्यायी के सूत्र भी धोखते हैं वे भी जानते हैं कि यह सूत्र ऐसा है। इस प्रकार के बहुत से प्रयोग व्याकरण आदि शिष्ट जनों के ग्रन्थों में आते हैं तो क्या सब अशुद्ध हैं। अब रहा कि ङीप् क्यों नहीं होता तो पात्रादिभ्यः प्रतिषेधः। महा० २/४/१७॥ यह वार्तिक इसीलिये है। पात्रादि आकृतिगण है। इसका परिगणन कहीं नहीं किया कि इतने ही पात्रादि शब्द हैं। महाभाष्यकार ने तो इस वार्तिक पर उदाहरण मात्र दिया है। अब इसी प्रकार 'द्विवर्षानन्तरम्' इसको भी शुद्ध समझ लेना चाहिये। पाणिनिजी महाराज ने अपने सूत्र में 'षण्मास' शब्द को पढ़ा है। इससे यह भी उनका उपदेश प्रसिद्ध विदित होता है कि 'षण्मास' आदि शब्दों में ङीप् कदापि नहीं होता और कोई किया चाहे तो अशुद्ध ही है*॥ ३॥

* आर्यदर्पण मई १८८० पृ० १२० पर छपा। वह अङ्क अगस्त के अन्त या सितम्बर के आरम्भ में छपा होगा। देखो श्रावण शु० १३ सं० १९३७ (१८

अगस्त १८८०) का पत्र।

४– संस्कृत वाक्य प्रबोध में रही एक अशुद्धि का संशोधन अशुद्धि के निर्देशक श्री बारहट किशनजी के पत्र के उत्तर में महर्षि दयानन्द द्वारा लिखे गये चैत्र कृष्णा १० सोमवार संवत् १९३९ के पत्र में इस प्रकार लिखा है–

बारहट श्री कृशनजी आनन्दित रहो।

विदित हो कि पत्र आपका आया समाचार विदित हुए। संस्कृत वाक्य प्रबोध के विषय में जो तुमने लिखा सो छापे वालों की भूल से छप गया है। वहाँ (एकत्रैकाङ्गुष्ठ एकत्र चतुरङ्गुलय:) ऐसा चाहिये, सो सुधार लीजिये।

पत्र व्यवहार पृष्ठ ४०९

संस्कृत वाक्य प्रबोध में रही अशुद्धियों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द द्वारा मुंशी बखतावर सिंह जो श्रा. शु. १३ बुध सं. १९३७ (सन् १८ अगस्त १८८०) को लिखे गये पत्र का निम्न लिखित अंश बहुत महत्त्वपूर्ण है। देखिये ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन [पूर्ण संख्या ३२९] पत्र २१६

"जो संस्कृत वाक्य प्रबोध पर पुस्तक छपाया है सो बहुत ठिकानो में उनका लेख अशुद्ध है। और कै एक ठिकानों में संस्कृत वाक्य प्रबोध में अशुद्ध भी छपा है। इस अशुद्धि के कारण तीन हैं। एक शीघ्र बनना, मेरा चित्त स्वस्थ न होना। दूसरा भीमसेन के आधीन शोधने का होना और मेरा न देखना न प्रूफ को शोधना। तीसरा छापेखाने में उस समय कोई कम्पोजीटर बुद्धिमान् न होना, लैंपों की न्यूनता होना। इसके उत्तर में जो–जो उनकी सच्ची बात है सो–सो शोधक और छापा का दोष रहेगा। इसके खंडन पर भीमसेन का नाम मत लिखना, किन्तु पंडित ज्वालादत्त के नाम से छापना। इस पर आगे के आर्य्यदर्पण में छापने के लिये पं. ज्वा. भी लिखेगा। भीमसेन भी लिखो, परन्तु उसका नाम उसपर छपवाने से उसके पढ़ने में वहाँ के लोग बहुत विरोध करेंगे।"

परिशिष्ट–२ (टिप्पणियाँ)

१ मूल में उपासीरन् पाठ है। सं०

२ मूल में यही पाठ है। प्रथम संस्करण में पाठ में **शरीर की शुद्धि करके ईश्वर ज्ञान के लिये संध्योपासन करो** पाठ है। इस कारण ही पं. अम्बिका दत्त व्यास ने इसकी आलोचना की।

३ मूल तथा प्रथम संस्करण में यही पाठ है। बाद के संस्करणों में त्वयि पठति कियन्तः..... व्यतीता पाठ परिवर्तित किया गया।

४ मूल में यही पाठ है। प्रथम संस्करण में जीवतः पाठ है।

५ मूल में आजका पाठ है।।

६ मूल और प्रथम संस्करण में यही पाठ है बाद में परिवेविष्ट किया गया।

७ मूल में 'होना' शब्द है।

८ मूल में राजपुरुषैरप्येवमेव सदा भवितव्यम् पाठ है।

९ राज सम्बन्धी पुरुषों को भी वैसे ही प्रजा के हित करने में सदा रहना चाहिये।

१० मूल और प्रथम संस्करण में तण्डुलाः पाठ है हिन्दी में चावल।

११ मूल और प्रथम संस्करण में यवान्=जव पाठ है।

१२ मूल में यही पाठ है प्रथम संस्करण में गृहीष्यामी पाठ है जो अशुद्ध है यह अशुद्धि दृष्टि दोष के कारण हुई मूल में गृ के ऋकार को काटकर ग्र शुद्ध किया गया है।

१३ मूल और प्रथम संस्करण में गृहीतव्यम् पाठ है।

१४ मूल में नहीं प्रथम संस्करण में है।

१५ मूल में और प्रथम संस्करण में अयम्मम लेखोऽस्ति पश्यताम्=यह मेरा लिखा है देखो। यह पाठ है।

१६ इस प्रकरण के क्र. सं. ३ से ६ तक के वाक्य मूल में नहीं है प्रथम संस्करण में है।

१७ मूल में है प्रथम संस्करण में नहीं।

१८ मूल में गन्ताऽहम्= मैं जाऊँगा पाठ है।

१९ मूल में यही पाठ है। प्रथम संस्करण में भवान् परेद्यु क्व गन्तासि पाठ है जिसे बाद में संस्करणों में भवान् परेद्यु क्व गन्ता पाठ बनाया गया।

२० मूल में और प्रथम संस्करण में नहीं।

२१ मूल में यह वाक्य और इसका भाषार्थ नहीं है। प्रथम संस्करण में है।

२२ मूल में यही पाठ है बाद में 'स इदानीं' पाठ परिवर्तित किया गया।

२३ मूल में यह शब्द नहीं है। प्रथम संस्करण में षड्जस्य=षड्ज का लिखा है षड्ज राग नहीं अपितु स्वर विशेष होता है। अतः यहाँ कल्याण राग का उल्लेख किया गया है सं.

२४ मूल में यही पाठ है बाद के संस्करणों में 'रात्रि गच्छेत् प्रभातं भवेत्' पाठ है।

२५ मूल में नहीं प्रथम संस्करण में है।

२६ मूल में लम्बोदरो=लबां पेट अर्थात् तोंद वाला पाठ है।

२७ मूल में प्रबुक्कन्ति पाठ है। प्रथम संस्करण में प्रक्कन्ति पाठ है जो अशुद्ध है।

२८ मूल में ब्रुबन्ति पाठ है।

२९ मूल में यही पांठ है बाद में 'स्वान्यण्डानि सेवते' पाठ किया गया।

३० मूल में जलपन्ति पाठ है।

३१ मूल में 'हंसगतिं' पाठ है।

३२ मूल में शिंशपस्य पुष्पीयन्ते शिंशयस्य भी पढ़ा जा सकता है, पाठ है।

३३ मूल में सम्भवत्वात् पाठ है।

३४ मूल में यही पाठ है प्रथम संस्करण में भोस्तक्षन्... प्रशस्तानि के बाद में कलाकीलशलाकादीनिर चित्वा दीयन्ताम् पाठ है जिसे बाद में संशोधन करके कलाकील शलाकादीनि संयोज्य दातव्यानी किया गया है।

३५ मूल में यही पाठ है प्रथम संस्करण में 'निर्मिमीस्व' पाठ जो अशुद्ध है जिसे बाद के संस्करणों में निर्मिमीष्व किया गया।

३६ मूल में यही पाठ है प्रथम संस्करण में 'विस्तराणि' पाठ है। उस पर पं. अम्बिका दत्त ने आपत्ति की थी वैसे यह पाठ भी ठीक है।

३७, ३८ मूल में ये वाक्य नहीं है।

३९ मूल में बध्नाहि पाठ है। प्रथम संस्करण में बध्नीहि पाठ है।

४० मूल में युद्धयतः पाठ है वह भी साधु है।

४१ यह वाक्य मूल में नहीं है।

४२ मूल वाक्य मूल में नहीं है प्रथम संस्करण में है। सं०

४३ मूल में यह वाक्य नहीं है। प्रथम संस्करण में है। सं०

४४ मूल में यही पाठ है प्रथम संस्करण में में तेकाचिकीर्षास्ति पाठ है। जिसके संबंध में पं. अम्बिका दत्त ने आलोचना की थी।

४५ मूल में तथा प्रथम संस्करण में 'संपादने लेखे च' पाठ है।

ओ३म्

आर्यसमाज के नियम

१- सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

२- ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करने योग्य है।

३- वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

४- सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये।

५- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहियें।

६- संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नति करना।

७- सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य वर्तना चाहिये।

८- अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये।

९- प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये।

१०- सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिये, और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

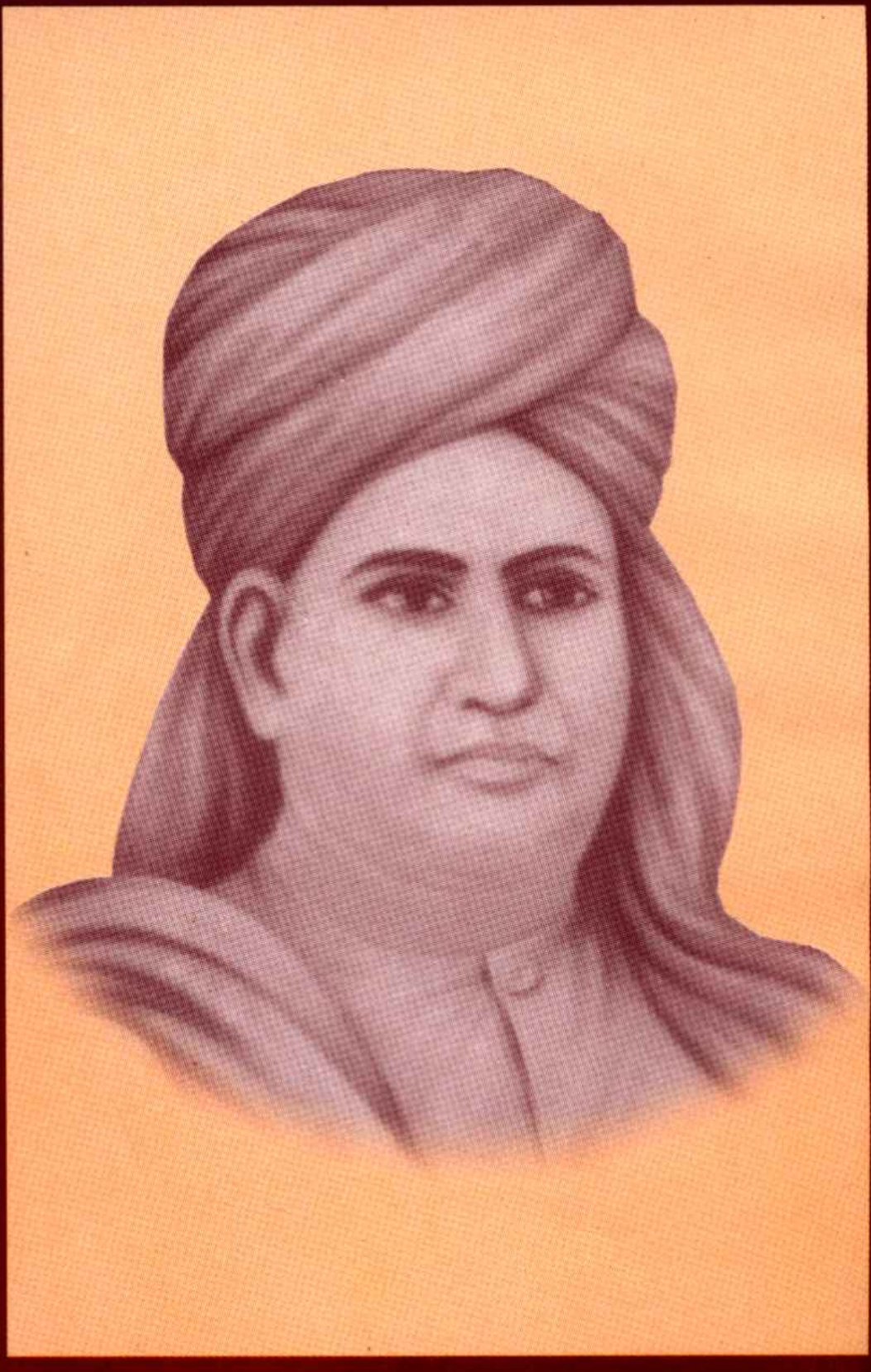

महर्षि दयानन्द सरस्वती